सीख सुहानी

- राजकुमार शास्त्री, द्रोणगिरि

लेखक द्वारा लिखित प्रकाशित साहित्य
अनुपलब्ध
₹ 10/-
₹ 20/-
मध्यांतर
₹ 30/-
₹ 20/-
बड़े सो पावे
अनुपलब्ध
₹ 20/-
प्रेरणा
₹ 20/-
भोलाराम
₹ 25/-
दुखते दोहे
₹ 5/-
समस्त चित्रांकन
शाश्वत आशिका शास्त्री, जबलपुर

सीख

सुहानी

- राजकुमार शास्त्री, द्रोणगिरि

"राग-द्वेष, भूख-प्यास, जन्म-मरण, नींद, पसीना, शोक, भय आदि दोष हैं, इनके कारण हम दुःखी होते हैं और इसके विपरीत अरहन्त भगवान को भूख नहीं लगती, प्यास नहीं लगती, किसी से डर नहीं लगता, किसी से प्रेम नहीं करते, किसी को आशीर्वाद नहीं देते, किसी को शाप नहीं देते, उन्हें नींद नहीं आती, पसीना नहीं आता वे इन सब दोषों से रहित हैं, इसलिए वे सुखी व शान्त हैं।"

– **इसी पुस्तक से**

समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट का 35 वाँ पुष्प

सीख सुहानी

लेखक

राजकुमार शास्त्री

प्रकाशक

समर्पण

18, आदिनाथ कॉलोनी, केशवनगर, उदयपुर (राज.)

मो. 91 9414103492

प्रस्तुत प्रकाशन में सहयोग करने वाले महानुभाव

1.	स्वर्णम् प्रकाश परिवार, रतलाम	3100/-
2.	श्रीमती माला अजमेरा, रतलाम	2100/-
3.	श्रीमती नन्दिनीबाई जैन, द्रोणगिरि	2100/-
4.	श्री अर्हम अजमेरा, रतलाम	1100/-
5.	श्रीमती कमला जैन के स्मृति दिवस पर श्री बालचन्द पटवारी, कोटा	1100/-
6.	श्री अशोक कुमार वानरे शास्त्री, सेलू (महाराष्ट्र)	1000/-
7.	विद्या-सागर जैन, उदयपुर	1000/-
8.	गुप्तदान, उदयपुर	1000/-

प्रथम संस्करण : 1000 प्रतियाँ (20 सितम्बर मंगलवार 2022)

प्राप्ति स्थान : **शाश्वतधाम, उदयपुर (राज.),**
मो. 91-9414103492
: **श्री दिनेश शास्त्री, जयपुर**
मो. 91-9928517346

पुनः प्रकाशन हेतु सहयोग राशि : 35/-

मुद्रक : **देशना कम्प्यूटर्स**
82, पॉल्ट्री फार्म, आगरा रोड, जयपुर
मो. 9928517346

प्रकाशकीय

अभी तक **'समर्पण'** द्वारा प्रकाशित साहित्य पाठकों के बीच भरपूर पसन्द किया गया। एतदर्थ लेखकों/पाठकों/अर्थ सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद।

'समर्पण' के 35वें पुष्प के रूप में पण्डित राजकुमार शास्त्री द्वारा लिखित **'सीख सुहानी'** प्रस्तुत है। आशा है पाठक इस संस्करण का भी पूर्व की भांति आनन्द लेंगे।

'समर्पण' द्वारा प्रकाशित साहित्य के प्रकाशन सहयोग हेतु पाठकों द्वारा अधिकांश अर्थ सहयोग पहले ही प्राप्त हो जाता है, अतः अधिकतर साहित्य **'जो चाहो ले जाओ, जो चाहो दे जाओ'** के आधार पर जाता है। अनेक साधर्मी अधिक संख्या में साहित्य लेते हैं तो सहयोग राशि भी प्रदान करते हैं, वह राशि जिन प्रकाशनों में सहयोग कम आता है, उनके प्रकाशन में व्यय हो जाता है।

छह वर्ष की अल्पावधि में 34 पुष्प प्रकाशित होना एवं उनका समाप्त होना हमारे लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

इस पुस्तक के प्रकाशन में जिन्होंने अर्थ सहयोग प्रदान किया है, उन्हें धन्यवाद। पुस्तक के आकर्षक मुद्रण हेतु श्री दिनेश जैन-देशना कम्प्यूटर्स जयपुर को भी साधुवाद देते हैं, जो कम समय में हमारी इच्छानुसार प्रकाशन में सहयोग प्रदान करते हैं।

आप पुस्तक पढ़कर जो भी आपके भाव हों, वह 9414103492 पर अवश्य ही सूचित करें। धन्यवाद।

निवेदक : **'समर्पण' चैरिटेबल ट्रस्ट, उदयपुर**

समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट : एक परिचय

देव-धर्म-गुरु के चरणों में, तन-मन-धन सब अर्पण।
आतमहित व तत्त्वज्ञान को, है सर्वस्व समर्पण।।

ट्रस्ट का नाम - समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट	**स्थापना तिथि** - 20 सितम्बर 2014

ट्रस्ट मण्डल - संरक्षक : 1. श्री अजित जैन बड़ौदा, 2. श्री चन्द्रभान जैन घुवारा, 3. श्री ताराचन्द जैन उदयपुर, 4. श्री प्रकाशचन्द छाबड़ा सूरत, 5. श्री ललितकुमार किकावत लूणदा।

अध्यक्ष - राजकुमार शास्त्री उदयपुर, **उपाध्यक्ष** - अजितकुमार शास्त्री अलवर, **कोषाध्यक्ष** - रमेशचन्द वालावत उदयपुर, **मंत्री** - डॉ. ममता जैन उदयपुर, **सहमंत्री** - पीयूष शास्त्री जयपुर, **ट्रस्टी** - पण्डित अशोकुमार लुहाड़िया तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ़, ऋषभकुमार शास्त्री छिन्दवाड़ा, डॉ. महेश जैन भोपाल, रतनचन्द शास्त्री भोपाल, इंजी. सुनील जैन छतरपुर, गणतंत्र 'ओजस्वी' आगरा।

ट्रस्ट की सामान्य रूपरेखा - उद्देश्य : 1. तत्त्वज्ञान, अहिंसा, शाकाहार, सदाचार का प्रचार करना। 2. सामाजिक विकृतियों के विरुद्ध जागरुकता पैदा करना। 3. अनुपलब्ध, आवश्यक व नये लेखकों का श्रेष्ठ साहित्य प्रकाशित करना। 4. सर्वोपयोगी पत्रिका प्रकाशित करना। 5. शिक्षा व चिकित्सा के क्षेत्र में आवश्यक मार्गदर्शन एवं सहयोग करना।

गतिविधि - 1. साहित्य प्रकाशन, 2. **संस्कार सुधा** मासिक पत्रिका का प्रकाशन, 3. **सुखायतन** - सुखार्थी साधर्मियों के लिए निःशुल्क-सशुल्क आवास-भोजन की व्यवस्था के साथ आध्यात्मिक पर्यावरण प्रदान करना, **4. साधर्मी वात्सल्य योजना** - साधर्मियों से स्वैच्छिक सहयोग लेकर योग्य साधर्मियों को शिक्षा/चिकित्सा सहयोग पहुँचाना। **5. 'प्रयास'** प्रकल्प के माध्यम से जैन समाज के युवा वर्ग को धार्मिक संस्कारों के साथ लौकिक जीवन में उन्नति के विविध क्षेत्रों का परिचय व मार्गदर्शन देना, यथायोग्य-यथासंभव सहयोग करना और इस प्रकल्प को सार्थक करने के लिए यदि आवश्यक हुआ तो केन्द्रों का निर्माण व संचालन करना।

मनोगत

सदाचार/श्रावकाचार/नैतिक शिक्षा एवं आध्यात्मिक विषयों को बाल/किशोर/युवा वर्ग तक पहुँचाने की भावना सदैव रहती है, एतदर्थ व्हाट्सएप संदेशों में कविता/कहानी या लेखों के माध्यम से अपनी बात पाठकों तक पहुँचाता रहता हूँ।

इसी क्रम में पिछले कई वर्षों से मन में चल रहा था कि पशु-पक्षियों को पात्र बनाकर जिस तरह संस्कृत साहित्य में पंचतंत्र/हितोपदेश ग्रंथ लिखे गए हैं, जैन साहित्य में भी कुछ कहानियाँ उपलब्ध होती हैं, उसी प्रकार से कुछ बात बच्चों को दृष्टि में रखें रखते हुए मुझे लिखना चाहिए।

इसके पूर्व 'भोलाराम शास्त्री' व 'पापा का बचपन' पुस्तकों के माध्यम से अनेक संदेश पाठकों तक पहुँचाए गए और जिन्हें पाठकों ने सराहा भी।

लगभग 2 वर्ष पूर्व जब कोरोना काल चल रहा था और घर में ही सभी बन्द थे, मैं भी शाश्वतधाम में दर्शन-पूजन-निजी स्वाध्याय के पश्चात् रिक्त समय में इधर-उधर देखता रहता था तो मेरे कमरे की खिड़की में लगभग हर वर्ष कबूतर अंडे देते हैं, बच्चे होते हैं। उनके दो बच्चों को देखकर मन में कुछ लिखने का भाव बना और जिन्हें 'सीख सुहानी' के नाम से कहानियाँ लिखकर प्रकाशित कर रहे हैं।

कहानियों के अनुरूप मुखपृष्ठ एवं अधिकांश चित्रों का चित्रांकन **शाश्वत आशिका जैन शास्त्री जबलपुर** तथा अन्य चित्रों का **शाश्वत प्रज्ञा जैन शास्त्री गुना व शाश्वत विधि जैन खनियांधाना** ने किया है, जिसके कारण पुस्तक का सौन्दर्य वृद्धिंगत हुआ है। **शाश्वत**

अनन्या जैन मेरठ ने सभी कहानियों को पढ़कर भाषा एवं विषयवस्तु में परिमार्जन किया है। एतदर्थ दोनों बालिकाओं के लिए मैं अनेक शुभाशीष देता हूँ। वह अपनी कला/ज्ञान का तत्त्व प्रचार-प्रसार हेतु इसी तरह उपयोग करती रहें - यही भावना है।

बालकों को यह सचित्र पुस्तक संभवतः अच्छी लगना चाहिए। भाव तो वही पुराने हैं, सिद्धान्त अनादि अनन्त हैं, उनको ही मात्र पात्रों को बदलकर चर्चा की गई है। यह कथा साहित्य के नियमानुसार यह पुस्तक बाल साहित्य के रूप में स्वीकृत होगी या नहीं, पता नहीं; परन्तु यदि बाल-किशोर पाठक पसन्द करते हैं तो मेरा प्रयास सार्थक होगा।

आपको यह पुस्तक कैसी लगी, कृपया अपने भाव 9414103492 पर बताने का श्रम कीजियेगा।

20 सितंबर 2022 **- राजकुमार शास्त्री**

विषयानुक्रमणिका

1.	जिन दर्शन	9
2.	जिन दर्शन महिमा	14
3.	विघ्न-भयों से न घबराना	20
4.	मित्रता	25
5.	कितनी अक्ल काम की?	32
6.	प्रकृति	40
7.	माता-पिता का कर्त्तव्य	46
8.	लालच	55
9.	हिंसा	60
10.	स्वतन्त्रता का सुख	67
11.	अयाचकता	75
12.	संतान को सम्पत्ति नहीं सन्मति दीजिए	80
13.	ज्ञान का सम्मान - देता केवलज्ञान	86
14.	शूरवीर	92
15.	मृत्यु प्रतीक्षा नहीं करती	98

सीख सुहानी

1

जिन दर्शन

शाश्वतधाम में मेरे कमरे की पीछे की खिड़की में ही गुटरगूँ-गुटरगूँ करती सुहानी कपोती अपने दो नवजात शिशु चिन्टू और पिन्टू के साथ रहती है।

यहाँ के सुरम्य पर्यावरण में सुहानी कपोती के परिवार के अतिरिक्त चिंकी चिड़िया, कालू कौआ, किट्टी कोयल, हरिहर तोता के परिवार भी कलरव करते रहते हैं।

चिन्टू-पिन्टू अभी उड़ना नहीं सीखे, अपनी माँ के पंखों के नीचे दुबक कर उसकी वात्सल्यमयी गर्मी पाकर निरन्तर वृद्धिंगत हैं।

सुहानी खाने-पीने की व्यवस्था के लिए दिन में कहीं भी जाती, पर हर घण्टे में उड़कर अपने बच्चों के पास जरूर लौट कर आती। चिन्टू-पिन्टू भी खिड़की में बैठे-बैठे उसका इंतजार करते हैं और दूर से ही आता देखकर उछलने लगते हैं। आखिर माँ तो माँ ही होती है।

मैं फुर्सत के क्षणों में इस परिवार की चहलकदमी को देखता

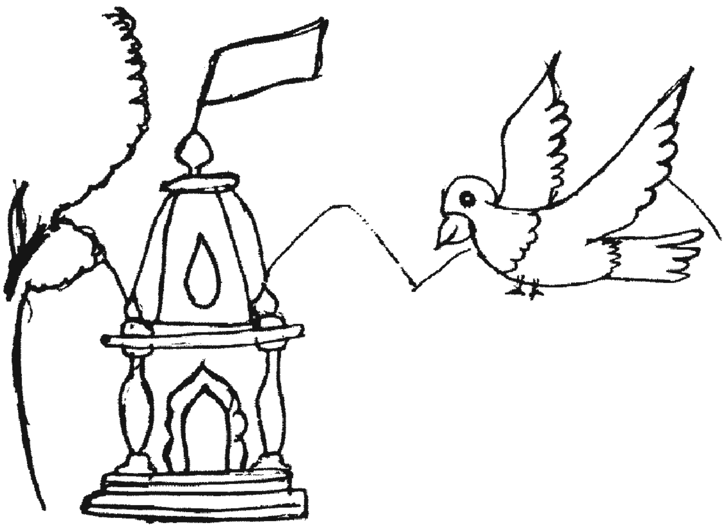

और इनकी प्यारी–प्यारी बातों को सुनकर समझने का प्रयास करता रहता।

सुहानी प्रतिदिन सुबह जल्दी उठ जाती। बच्चे भी उसके साथ ही उठते और उछल–कूद करते हुए अपनी छोटी–सी चोंच खोलकर मानो 'मम्मी–मम्मी भूख लगी है' की रट लगाने लग जाते।

एक दिन सुहानी बाहर गयी और लौट कर आयी तो चिन्टू ने कहा – ''मम्मी! आप नाश्ता लाने में बहुत देर लगा देती हो, हमें बहुत भूख लगी होती है।''

पिन्टू बोला – ''हाँ मम्मी! देखो न! हम कब से नाश्ते का

इंतजार कर रहे हैं; पर आप सुबह जब नाश्ता लेने जाती हो तो बहुत देर कर देती हो।''

बच्चों की बात सुनकर सुहानी बोली ''बेटा! सुबह कभी भी भगवान के दर्शन किए बिना कुछ खाना नहीं चाहिए; इसलिए मैं सुबह पहले मन्दिर जाती हूँ, वहाँ पर पूजन करती हूँ और फिर नाश्ता लाती हूँ, इसलिए देर हो जाती है।''

''मम्मी! आप मन्दिर क्यों जाती हो और वहाँ किसकी पूजन करती हो?'' चिन्टू ने पूछा।

''बेटा! हमें प्रतिदिन जिनेन्द्र भगवान के दर्शन करना चाहिए, उनके दर्शन करने के बाद ही गृहस्थी का कोई भी कार्य करना चाहिए। मैं उनके दर्शन करने और उन्हीं की पूजन करने मन्दिर जाती हूँ।''

पर ''मम्मी! आप उनके ही दर्शन करने क्यों जाती हो?'' चिन्टू ने कहा।

''बेटा ! देखो अपने पड़ोस में चिंकी चिड़िया रहती है न? जो बहुत ही भोली, प्यारी व सेवाभावी है और दूसरा कालू कौआ, जो हमेशा काँव-काँव करता रहता है, जब चाहे तुम्हें परेशान करने आता है व चिंकी चिड़िया और किट्टी कोयल को भी डराता रहता है।''

''यह तो हमें पता है कि चिंकी चिड़िया अच्छी है और कालू

कौआ बुरा; पर इसका आपके मन्दिर जाने से क्या लेना-देना?'' पिन्टू ने कहा।

''बेटा! अब तुम ही मुझे बताओ कि सुबह-सुबह तुम चिंकी और कालू में से किससे मिलना चाहोगे?''

''मम्मी! हम तो चिंकी चिड़िया से ही मिलना चाहेंगे; कालू का तो हम चेहरा देखना तो क्या, नाम भी नहीं लेना चाहते। हम कालू जैसे गन्दे नहीं बनना चाहते, हम तो चिंकी जैसे भले बनेंगे।''

''शाबाश बेटा! मैं भी यही चाहती हूँ कि तुम चिंकी जैसे भले बनो। ठीक इसी प्रकार दुनिया में सबसे भले/निर्दोष अरहन्त भगवान हैं, इसलिए मैं सुबह-सुबह उनके दर्शन करने अर्थात् उनसे मिलने जाती हूँ। जिससे मैं भी उनके जैसी बन सकूँ।''

''मम्मी! आपने अभी कहा कि अरहन्त भगवान निर्दोष हैं। तो निर्दोष किसे कहते हैं?'' चिन्टू ने पूछा।

''राग-द्वेष, भूख- प्यास, जन्म-मरण, नींद, पसीना, शोक, भय आदि दोष हैं, इनके कारण हम दुःखी होते हैं और इसके विपरीत अरहन्त भगवान को भूख नहीं लगती, प्यास नहीं लगती, किसी से डर नहीं लगता, किसी से प्रेम नहीं करते, किसी को आशीर्वाद नहीं देते, किसी को शाप नहीं देते, उन्हें नींद नहीं आती, पसीना नहीं आता वे इन सब दोषों से रहित हैं, इसलिए वे सुखी व शान्त हैं।''

"अरे वाह! उन्हें भूख-प्यास नहीं लगती? तब तो उनके मजे होंगे। हमें तो यहाँ भूख के कारण रोना आ रहा है। मम्मी! तुम्हारे भगवान को भूख नहीं लगती तो उनकी मम्मी को नाश्ता और भोजन भी नहीं लाना पड़ता होगा?" चिन्टू ने कहा।

"हाँ बेटा! उन्हें भूख-प्यास नहीं लगती, पसीना नहीं आता और वे किसी से राग-द्वेष नहीं करते। उन्हें दुनिया का कोई भी प्राणी या वस्तु अच्छी-बुरी नहीं लगती, इसलिए सच में उनके ही मजे हैं, वे ही सुखी और परम शान्त हैं।"

"अच्छा! तो आप भी उन जैसा शान्त बनना चाहती हो; उन जैसा सुखी होना चाहती हो; इसलिए सुबह-सुबह उनके दर्शन को जाती हो?" पिन्टू ने कहा।

"अरे वाह! मेरे बेटे कितने समझदार हैं। हाँ, मैं भी उन जैसी सुख-शान्ति प्राप्त करना चाहती हूँ।"

"मम्मी-मम्मी! हमें भी मन्दिर ले चलो ना? हम भी ऐसे दोष रहित, परम शान्त भगवान को देखना चाहते हैं।"

"बेटा! दो-तीन दिन में तुम उड़ने लग जाओगे, तब तुम्हें भी सबसे पहले मन्दिर ही ले जाऊँगी, वीतरागी-निर्दोष परमात्मा के दर्शन कराऊँगी। ठीक है?"

"ठीक है मम्मी! अब हमें नाश्ता दे दो।"

"हाँ-हाँ बेटा! अभी नाश्ता देती हूँ।" ❖❖❖

2

जिन दर्शन महिमा

चिन्टू और पिन्टू आज बहुत ही खुश दिखाई दे रहे हैं। दोनों ही हँसते–खेलते हुए तगारी में रखे पानी से नहा रहे हैं, एक–दूसरे पर पानी उछाल रहे हैं। उनकी माँ सुहानी उनको बार–बार शान्ति से नहाने के निर्देश दे रही है; पर उन दोनों की खुशी तो आज हृदय में समा ही नहीं रही है, क्योंकि आज वे घर से बाहर निकलकर उन्नत नील गगन में पहली उड़ान भरकर, वीतरागी निर्दोष परमात्मा के दर्शन करने मन्दिर जाने वाले हैं।

चिन्टू–पिन्टू करें गुटरगूँ।
पंख फड़फड़ा करें गुटरगूँ।।
मन्दिर जायें मैं और तूँ।
नीले नभ में करें गुटरगूँ।।

नहा–धोकर जैसे ही वे तैयार हुए, सुहानी ने कहा "बच्चो! आज तुम्हारे जीवन का अविस्मरणीय दिन है कि तुम अपनी पहली उड़ान भरकर जिन–मन्दिर जाओगे।

दुनिया में करोड़ों–अरबों ऐसे जीव हैं, जो जिन–मंदिर जाना ही नहीं चाहते। बहुत से जीव ऐसे हैं जो जाना चाहते हैं, पर उनके भाग्य में दर्शन नहीं हैं। तुम्हारी किस्मत अच्छी है कि

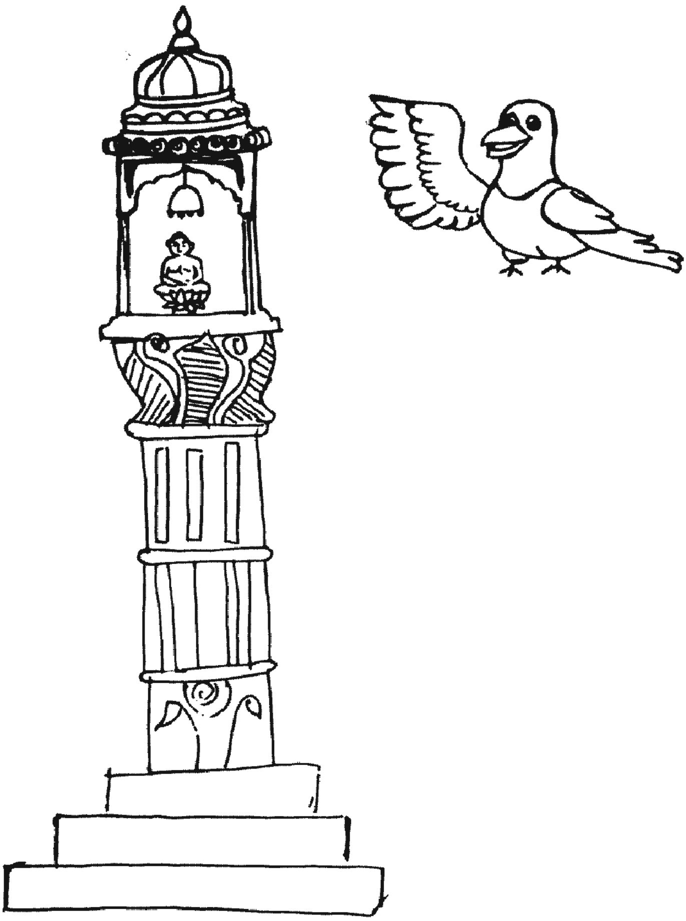

तुम जिन–मन्दिर में दर्शन करने जा रहे हो। तुम्हारा जीवन बहुत मंगलमय हो – मेरी यही शुभकामना है। चलो हम मन्दिर चलते हैं।''

जैसे ही सुहानी ने उड़ान भरी उसके पीछे प्रसन्न मुद्रा में चिन्टू और पिन्टू ने भी अपने छोटे-छोटे से पंख खोल कर उड़ना प्रारम्भ किया।

मंदिर के बाहर ही मानस्तंभ देखकर, पैर धोकर उन्होंने हाथ जोड़कर प्रवेश करते हुए कहा -

''देखत मान गले मानी का, मानस्तम्भ सार्थक नाम।
चतुर्मुखी जिनबिम्ब विराजे, भक्ति सहित मैं करूँ प्रणाम।।''

सुहानी ने भक्ति पूर्वक नमन किया, जिसे देखकर चिन्टू-पिन्टू ने भी नमन किया और फिर मन्दिर में प्रवेश किया।

भव्य जिनालय में सीमन्धर भगवान, पद्मप्रभ भगवान, शान्तिनाथ भगवान, आदिनाथ भगवान, महावीर भगवान विराजमान हैं।

उनके सम्मुख पहुँचते ही सुहानी ने गाना शुरू किया -

पुण्योदय है आज हमारा जिनवर दर्शन पाए हैं।
जिन-दर्शन कर निज दर्शन हों यही भावना भाए हैं।।

जिनपथ को जो जन ना पाते, भव-भव में वे रुलते हैं।
पुण्योदय जो जिनपथ पाएँ, मुक्ति पथ वे चलते हैं।।

चिन्तामणि सम तुमको पाया, हो फिर क्यों जग की आशा ?
आप दर्श से पौरुष जागा क्षण में मोह तिमिर नाशा।।

जिनवर का पथ हमें मिला है, खुद जिनवर बन जाने को।
भक्तिभाव से करो अर्चना, लौट ना भव में आने को।।

सुहानी ने बच्चों को बताया –

"जिनेन्द्र भगवान का दर्शन पापों का नाश करने वाला है, स्वर्ग की सीढ़ी है और मोक्ष का कारण है।"

जिस प्रकार से माँ ने भक्ति–भाव पूर्वक दर्शन किए, चिन्टू–पिन्टू ने भी माँ की नकल करते हुए भगवान के सामने नतमस्तक होकर दर्शन किए। और भावना भायी – "हे भगवान! हम सन्मार्ग पर चलें, हमारे जीवन में दुःख न हो।"

सुहानी ने बच्चों से कहा "बच्चो! आज से तुम प्रतिदिन जिनेन्द्र भगवान के दर्शन करना। हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह – इन पाँच पापों का बुद्धि पूर्वक एकदेश त्याग करना और मद्य अर्थात् शराब, मधु अर्थात् शहद और माँस इनका त्याग करना; आज से ये अष्ट मूलगुण तुमने धारण किए हैं, इसलिए अब तुम जैन हो गए।"

चिन्टू और पिन्टू यह बात सुनकर बहुत खुश हुए और दोनों ने हाथ जोड़कर जिनेन्द्र भगवान को नमस्कार किया।

इसके बाद वे घर वापस आ गए। चिन्टू ने माँ से पूछा "माँ! जिनेन्द्र भगवान के दर्शन करने से क्या लाभ होता है?"

सुहानी ने कहा "बेटा! हम जिनके नजदीक रहते हैं, जिन

को अपना आदर्श मानते हैं, उन जैसा बनने की भावना भाते हैं। जो उन जैसे बनने की भावना भाता है, वह उनके जीवन को जानता है, उनके उपदेश को सुनता है, तो उनके बताए मार्ग पर चलकर उन जैसा बन जाता है।''

''मम्मी ! मन्दिर में एक ही भगवान की इतनी सारी मूर्तियाँ क्यों विराजमान की गयी हैं।'' पिन्टू ने पूछा।

''बेटा ! वे अलग-अलग भगवान की मूर्तियाँ हैं।''

''सबके चेहरे तो एक जैसे ही हैं। अगर अलग-अलग भगवान की मूर्ति हैं तो वे अलग-अलग दिखनी चाहिए।'' चिन्टू ने बाल सुलभ सहजता से पूछा।

''देखो बेटा ! हमारे सभी भगवान वीतरागी-सर्वज्ञ-अनन्त सुखी हैं। सभी भगवान एक जैसे गुण वाले हैं; इसलिए उन सबकी एक जैसी ही मूर्तियाँ हैं।''

''अच्छा ! इसका मतलब यह है कि वे सब अन्दर से एक जैसे हैं इसलिए बाहर से भी एक जैसे हैं और हम सब अन्दर से अलग-अलग विचारों वाले हैं तो बाहर भी सब अलग-अलग दिखाई देते हैं।''

''हाँ बेटा ! तुमने बिल्कुल सही बात समझी। अब, हमारे विचार भगवान जैसे हो जाएँ इसके लिए हमें रोजाना उनके दर्शन करना चाहिए और वे भगवान कैसे बने यह समझने का

प्रयास करना चाहिए।''

''मम्मी! हम आपको वचन देते हैं कि आज से हम प्रतिदिन भगवान के दर्शन करने जरूर जाएंगे।'' चिन्टू-पिन्टू ने कहा।

''बेटा! हमेशा ध्यान रखना कि जीव जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है, तुम अपने आकार-प्रकार को नहीं देखना, बल्कि अपने अच्छे विचारों और आचरण से अपने जीवन को सफल/सार्थक करना। यही मेरी शुभकामना है।''

''चलो बेटा! नाश्ता कर लें।''

''हाँ मम्मी! चलो नाश्ता करते हैं।''

नाश्ता करने के बाद चिन्टू ने सुहानी से कहा ''मम्मी अब हम चिंकी के यहाँ खेलने चले जायें?''

''ठीक है। पर तुमने अभी उसका घर नहीं देखा इसलिए मैं तुम्हें चिंकी के घर छोड़कर फिर बाजार चली जाऊँगी।''

''ठीक है, मम्मी।''

''हाँ, पर एक बात ध्यान रखना वहाँ जाकर झगड़ा और तोड़-फोड़ नहीं करना।''

''जी मम्मी।''

गुटरगूँ-गुटरगूँ करते सभी पंख फड़फड़ा कर उड़ गए।

❖❖❖

3

विघ्न-भयों से न घबराना

सुहानी कबूतरी, चिंकी चिड़िया, किट्टी कोयल, टीना टिटहरी, कालू कौआ, हरिहर तोता इत्यादि पक्षी सपरिवार उन्मुक्त नील गगन में उड़ते रहते एवं आश्रय पाने शाश्वतधाम के आसपास ही सभी अपने-अपने घोंसले बनाकर रहते।

सायंकाल भोजन करने के बाद सभी छत पर आ जाते और वहाँ पर चूं-चूं, चीं-चीं, गुटरगूं- गुटरगूं, टें-टें आदि की मधुर कलरव गूँजने लगती। यह इन पक्षियों का 'आनन्द विहार' था। इस 'आनन्द विहार' में पक्षी आपस में मित्रता निभाते हुए साथ में रहते और खुशी-खुशी जीवन व्यतीत कर रहे थे।

इन पक्षियों में कालू कौआ उद्दण्ड प्रकृति का था। उसे घूमना-फिरना, मौज-मस्ती करना और दूसरों को परेशान करना अच्छा लगता था, जबकि सुहानी के साथ चिन्की, टीना, किट्टी स्वाध्याय प्रेमी और सामाजिक जिम्मेदारियों को समझने वाली थी।

एक दिन 'आनन्द-विहार' का पूरा पक्षी परिवार एकत्र हुआ और सभी अपनी दिनचर्या के सम्बन्ध में बातचीत कर रहे थे कि तभी चिंकी चिड़िया ने कहा कि -

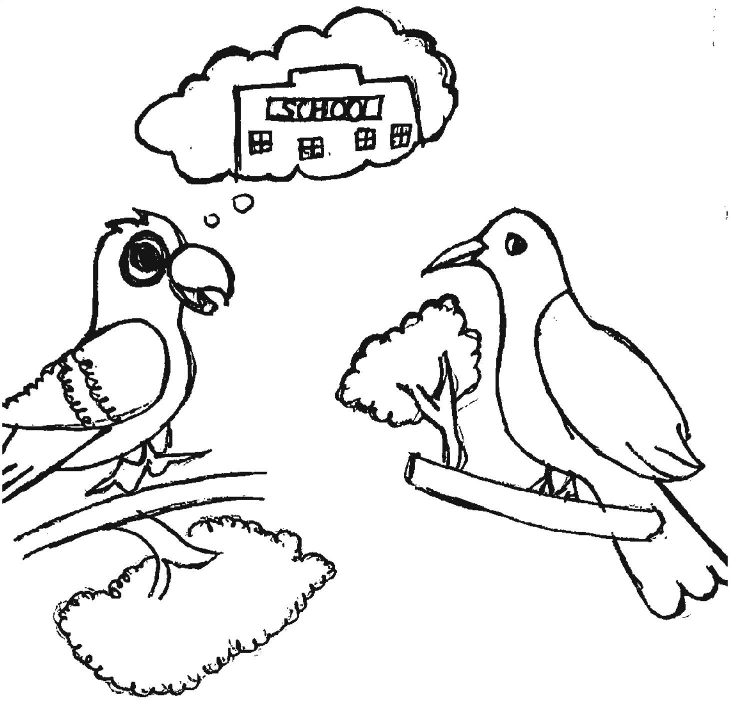

"सुनो-सुनो! सब ध्यान पूर्वक सुनो! मैं चाहती हूँ कि आनन्द-विहार के सभी बच्चों और युवाओं का एक संगठन बनाया जाये।"

"संगठन बनाकर क्या करेंगे ?" हरिहर तोते ने पूछा।

"इस संगठन के माध्यम से पक्षी समाज को शिक्षा/चिकित्सा के सम्बन्ध में और समाज में फैल रही कुरीतियों के विरुद्ध

जागरूक करेंगे।''

कालू कौआ काँव-काँव करते हुए बीच में ही बोल पड़ा 'तुम्हें कुछ पता भी है या जबरदस्ती नेतागिरी कर रही हो? कोई भी काम करने जाओ तो बहुत समस्याएँ आती हैं। कोई साथ नहीं देता, सब हजारों मीन-मेख निकालते हैं, हद तो तब हो जाती है, जब लोग ऐसे ताने मारने से भी पीछे नहीं हटते कि इन्हें तो कोई काम-धाम नहीं है, सारी दुनिया का ठेका इन्हीं ने ले रखा है। इसलिए हम तो ऐसे फालतू के कामों को पसन्द नहीं करते। जिन्हें अपने बच्चों की पढ़ाई और अपना समय बरबाद करना हो, जिनसे शान्ति से घर में न रहा जाता हो वे ही समाज के कीचड़ में कूदें। मैं तो भैया समस्याओं/बाधाओं को दूर से ही जय जिनेन्द्र कर देता हूँ। इसलिए मेरा विचार है कि ऐसे काम हमें नहीं करना चाहिये। यदि करोगे तो पछताओगे, हाँ! देख लेना।' काँव-काँव करते कालू अपने घर जाने लगा।

तभी हरिहर तोते ने टें टें करते हुए कालू से कहा ''देखो भैया! काम तो कुछ भी करो, कोई न कोई समस्या तो आती ही है, तुम काम शुरू होने से पहले ही क्यों भाग रहे हो? किसी ने सही ही कहा है -

उद्यम से ही कार्य सिद्ध हों, नहीं सोचने से होते।
कर पर जो कर धरकर बैठे, व्यर्थ समय हैं वे खोते।।

राजा हो या रंक जगत में, जो भी आलस करते हैं।
असफल होकर बैठे रहते, जीवनभर वे हैं रोते।।

मेरे विचार से तो चिंकी चिड़िया ने जो कहा है उसके अनुसार 'नभचर युवा मण्डल' का गठन अवश्य करना चाहिए।"

"हरिहर भैया सही कह रहे हैं। हमें संगठन बनाना ही चाहिए। इस संगठन द्वारा हम युवकों को रोजगार/शिक्षा/चिकित्सा की सब सुविधाएँ उपलब्ध करायेंगे। अज्ञानता ही सब समस्याओं की जड़ है; इसलिए सबसे पहले एक अच्छा स्कूल खोलेंगे।" किट्टी कोयल ने अपनी बात रखी, जिसका सभी ने ताली बजाकर स्वागत किया।

तभी टीना टिटहरी ने कहा – "यदि कोई समस्या आई तो हम काम बीच में ही बन्द कर देंगे और सबसे क्षमा याचना कर लेंगे कि भैया! अब हमसे यह काम नहीं हो पा रहा है।"

सुहानी ने सबको समझाते हुए कहा – "अरे! आप लोग अच्छे काम में विघ्न बाधाओं की बात ही क्यों कर रहे हैं? काम प्रारम्भ करने से पहले ही डरना और बीच में छोड़कर के भागने की बात करना अच्छा नहीं है। मनीषियों ने तीन प्रकार के जीव बताये हैं –

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।

विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः,
प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति।।

जो विघ्नों के डर से काम प्रारम्भ ही नहीं करते, वे नीच हैं। जो काम प्रारम्भ तो करते हैं; परन्तु विघ्न आते ही काम छोड़कर भाग जाते हैं, वे मध्यम हैं और जो उत्तम जीव हैं, वे तो सोच-समझकर काम प्रारम्भ करते हैं फिर बार-बार विघ्न-बाधाओं के आने पर भी धैर्य पूर्वक उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं।

इसलिये बच्चो! हम सब मिलकर यदि उत्साहपूर्वक काम करेंगे, तो हमें सफलता अवश्य मिलेगी, क्योंकि परिश्रम करने से ही सभी कार्य सिद्ध होते हैं। इसलिए हमें अच्छा काम जरूर करना चाहिए, विघ्न-भयों से घबराना नहीं चाहिये।" सभी ने करतल ध्वनि से सुहानी की बात का समर्थन किया। ❖❖❖

चाह नहीं है

चाह नहीं है, सुख सुविधा में रहकर पाप कमाऊँ।
चाह नहीं है, पुण्य कमाकर स्वर्गादिक पद पा जाऊँ।।
चाह नहीं है, धन-पद पाकर सबके बीच में इठलाऊँ।
चाह यही है, जिनवचनों में रमकर निजपद पा जाऊँ।।1।।
चाह नहीं है, प्रभुगुण गाकर मैं गायक बन जाऊँ।
चाह नहीं है, लिख-लिखकर मैं इक लेखक बन जाऊँ।।
चाह नहीं है, चलूँ भीड़ के आगे अरु नायक कहलाऊँ।
चाह यही है, इस जीवन में, ज्ञायक हूँ, अनुभव लाऊँ।।2।।

4

मित्रता

चिन्टू और पिन्टू एक खिड़की से दूसरी खिड़की, एक डाली से दूसरी डाली पर उछल-कूद करते, गुटरगूँ-गुटरगूँ करते हुए दौड़ते-भागते रहते और सुहानी अपने बच्चों की इस चहलकदमी को देख-देखकर बहुत खुश होती।

एक दिन चिन्टू और पिन्टू चोंच लड़ाते हुए छत पर खेल रहे थे कि कालू कौए ने चिन्टू को अपने पास बुलाया। पिन्टू ने चिन्टू को कालू के पास जाने से रोका, चिन्टू भी कालू के पास जाने में संकोच कर रहा था; परन्तु काले मन वाले कालू ने प्यार भरी आवाज में उसे अपने पास बुला ही लिया और अपने पास जो दो मक्की के दाने थे वे उसे खिलाये। उनको खाकर चिन्टू को बहुत अच्छा लगा। कालू ने चिन्टू से कहा कि यदि तुम मेरे साथ घूमने चलोगे तो मैं तुम्हें बहुत अच्छी-अच्छी जगह घुमाऊँगा और अच्छे-अच्छे दाने भी खिलाऊँगा।

पिन्टू ने चिन्टू को तुरन्त बुलाया 'चलो चिन्टू! अब अपने घर चलें, नहीं तो मम्मी डाँटेगीं।'

घर पहुँचकर पिन्टू ने सुहानी से कहा "मम्मी! आज जब हम खेल रहे थे, तब कालू ने चिन्टू को अपने पास बुलाया और

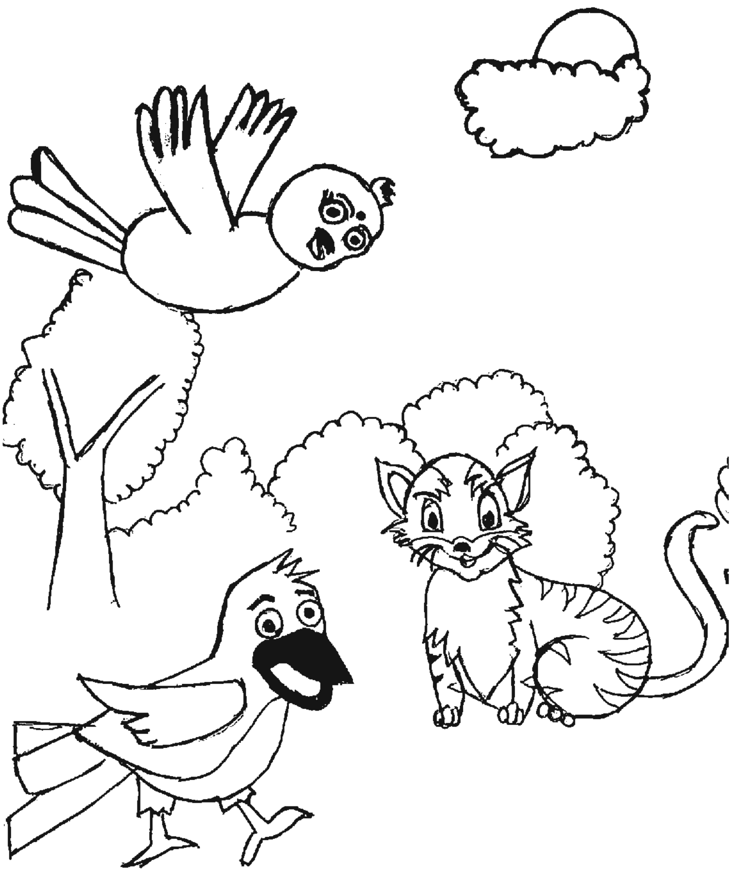

इसे कुछ खिलाया भी था।''

सुहानी इस बात को सुनकर हैरानी से चिन्टू की तरफ देखने लगी और उसे समझाते हुए कहा ''बेटा! कालू अच्छा नहीं है।

उसके साथ दोस्ती करना खतरों से खाली नहीं रहेगा। वह बहुत बदमाश है, चालू है। यह सब समझने के लिए तुम अभी बहुत छोटे हो इसलिए उससे दोस्ती नहीं करना।''

''नहीं मम्मी! आपको नहीं पता, कालू बहुत अच्छा है। उसने मुझे बहुत प्यार से बुलाया, मेरे सिर पर हाथ फिराया, मुझे मीठे–मीठे मक्के खिलाए और उसने कहा है कि वह मुझे अच्छी–अच्छी जगह घुमाने ले जाएगा और दाने खिलाएगा।''

''चिन्टू तुम अभी बहुत भोले हो, उसकी चाल को समझते नहीं हो, कालू केवल तन से काला नहीं है, मन का भी बहुत काला है। जो गलत रास्ते पर चलने वाले हैं, उन्हें कभी भी अपना दोस्त नहीं बनाना चाहिए, नहीं तो हमें बहुत परेशानी उठानी पड़ सकती है।''

चिन्टू ने अनमने ढंग से ''ठीक है मम्मी!'' कह दिया।

कालू रोजाना छत पर आ जाता, चिन्टू को कुछ खिलाता और कभी–कभी बाहर घुमाने के लिए ले जाता। पिन्टू यह देखता रहता, वह बेचारा अकेला रह जाता।

चिन्टू कालू के बहकावे में आता जा रहा था। एक दिन चिन्टू और पिन्टू दोनों को सुहानी ने जो दाने खाने के लिए दिए उनमें से चिन्टू, पिन्टू के भी दाने लेकर के उड़कर कालू के पास पहुँच गया और कालू को खाने के लिए दे दिया।

पिन्टू रोता हुआ सुहानी के पास पहुँचा और सुहानी से कहा ''मम्मी देखो न, आज तो चिन्टू ने मेरा खाना भी कालू को खिला दिया।''

सुहानी यह सुनकर आश्चर्यचकित होकर रह गई कि 'चिन्टू को यह क्या होता जा रहा है? वह हमारी बात क्यों नहीं मान रहा है?' जब चिन्टू घर पर आया तो सुहानी ने उसे समझाया – ''बेटा! तुम बहुत अच्छे बच्चे हो। आज तुमने कालू की दोस्ती के चक्कर में अपने भाई का भोजन उसे दे दिया – ऐसे तो तुम कभी अपने घर से कुछ सामान भी उठाकर उसे दे दोगे?''

''मम्मी! इसमें क्या बुरा हो गया? वह मुझे रोजाना खिलाता है, घुमाने ले जाता है, फिर मैंने भी आज उसे कुछ खिला दिया तो इसमें क्या बिगड़ गया?'' चिन्टू ने बड़ी उद्दण्डता के साथ जवाब दिया।

सुहानी समझ गई कि चिन्टू कालू के जाल में फँस चुका है। कालू की बिल्ली मौसी से दोस्ती थी और दोनों ही मिलकर अनेक कबूतरों को खा चुके थे। उसे इस बात का डर था कि कालू कहीं चिन्टू को भी इसी तरह अपना व बिल्ली का भोजन न बना लेवे।

एक दिन सुहानी को पता लगा कि कालू, बिल्ली मौसी के यहाँ पर बैठा बातें कर रहा है। वह समझ गई कि कुछ न कुछ

चालाकी की बातें हो रही होंगी। वह तुरन्त ही घर आई और चिन्टू को अपने साथ लेकर चली कि ''चलो बेटा! हम बाहर जाकर के आते हैं।'' और फिर जहाँ पर कालू कौआ और बिल्ली मौसी बातें कर रहे थे वहीं एक किनारे पर चिन्टू को बैठा दिया और कहा ''चिन्टू! मैं थोड़ी देर में लौट कर आती हूँ, तब तक तुम यहीं बैठे रहना।''

चिन्टू की नजर जब नीचे गई तो उसने देखा कि कालू कौआ और बिल्ली मौसी दोनों हँस-हँसकर के बातें कर रहे हैं। उसने चुपचाप दोनों की बातें सुनने की कोशिश की तो उसके होश उड़ गये। बिल्ली मौसी कह रही थी ''कालू! तुमने चिन्टू के रूप में अच्छा नाश्ता फँसाया है।''

कालू कह रहा था ''हाँ मौसी! मैंने उसे अपनी दोस्ती के जाल में फँसा तो लिया है। जब मैं कल उसे लेकर यहाँ आऊँगा फिर तुम्हारा काम है कि उसका भोजन बनाओ। लेकिन मुझे भूल मत जाना।''

''कभी ऐसा हुआ कि मैंने भोजन बनाया हो और तुम्हें उसमें से खाने को न मिला हो।''

''चिन्टू भोला क्या जाने कि किस कालू कौआ के जाल में फाँसा है?'' दोनों ताली देकर के हँसने लगे।

चिन्टू तो घबराकर कोने में दुबक कर रह गया। सुहानी लौट

कर आई। चिन्टू को सहमा हुआ देखकर उसे विश्वास हो गया कि जो वह चाह रही है शायद वह काम हो गया है।

जब वे घर आए तो चिन्टू ने कहा "मम्मी ! मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई। मैंने कालू को अपना दोस्त समझ लिया। वह दोस्त नहीं, वह तो पक्का दुश्मन है। अब मैं कभी भी कालू के साथ नहीं जाऊँगा। अब मैं और पिन्टू ही खेलेंगे, कूदेंगे और घर के काम में सहयोग करेंगे।"

सुहानी ने चिन्टू और पिन्टू को गले लगा लिया और दोनों को अपने सामने बैठा कर, अपने हाथों से गेहूँ के दानों का नाश्ता कराते हुए प्रेम से समझाया। "बच्चो ! हमें अपने जीवन में मित्र की आवश्यकता होती है, यह सही है परन्तु मित्र हमें सोच समझकर ही बनाना चाहिए। जो गलत रास्ते पर चलने वाले हैं, जिनको बातचीत करने का सही तरीका नहीं आता, जो अच्छे कामों से दूर रहते हैं, बुरे काम करते हैं और बुरे काम करने वालों का साथ देते हैं – ऐसे लोगों से हमेशा बच कर रहना चाहिए उनसे कभी दोस्ती नहीं करना चाहिए।

पाप मार्ग से दूरकर, हितकर शिक्षा देत।
अवगुण को जो नष्ट कर, गुण प्रकाश कर देत।।
न्याय-नीति पर ले चले, मन को रखे पवित्र
सुख-दुख में जो साथ दे, उसको मानो मित्र।।

इस तरह जो हमें सही मार्ग पर ले जाने वाला, निर्लोभी, सुख–दु:ख में साथ देने वाला हो, उसे ही मित्र बनाना चाहिए।''

''ठीक है मम्मी! हम आपकी शिक्षा अवश्य ध्यान में रखेंगे।''

दूसरे दिन सुबह कालू काँव–काँव करते सुहानी के घर के पास आया और चिन्टू को आवाज लगाते हुए बोला ''चिन्टू! जल्दी बाहर आओ, चलो! आज हम गुलाब बाग घूमने चलेंगे।''

चिन्टू ने अन्दर से ही जवाब दिया ''कालू भैया! मैं आपके साथ नहीं आ सकता। मैं तो यहीं पिन्टू के साथ खेलूँगा। मुझे कहीं बाहर घूमने नहीं जाना।''

कालू चिन्टू की बात सुनकर और उसके व्यवहार को देखकर समझ गया कि शिकार अपने हाथ से निकल गया। वह मन मसोस कर और नीचे गर्दन किए हुए वहाँ से उड़ गया। ❖❖❖

भावना

भव्य भवन की नहीं भावना, हो चरित्र निर्माण।
धन–पद–यश की नहीं लालसा, लक्ष्य एक निर्वाण।।
कहने वाले कहते रहते, कहना उनका काम।
पर निरपेक्ष सदा जो चलते, मध्य रंच न लें विश्राम।।
निज–पर हित जो सदा जागते, मंजिल वे ही पाते हैं।
जो प्रमाद में सोते रहते, खड़े यहीं रह जाते हैं।।

5

कितनी अक्ल काम की ?

'आनन्द-विहार' में ग्रीष्मकालीन शिविर में चिंकी चिड़िया, चिन्टू-पिन्टू, टीना, किट्टी आदि सभी उत्साह पूर्वक अध्ययन कर रहे थे। सुहानी सभी को बहुत ही वात्सल्य पूर्वक सात तत्त्वों का पाठ पढ़ा रही थी –

"जो जानता-देखता और सुख-दुःख का अनुभव करता है, उसे जीव कहते हैं। जीव अनन्त हैं, मैं भी जीव हूँ।

ज्ञान रहित अन्य सभी अजीव तत्त्व हैं।

मोह-राग-द्वेष भावों को भाव आस्रव और इन भावों के निमित्त से द्रव्य कर्मों के आने को द्रव्य आस्रव कहते हैं।"

सरल भाषा में वह सभी को पढ़ा रही थी और बीच-बीच में पूछती भी जा रही थी। चिंकी चिड़िया बहुत ही उत्साहपूर्वक पढ़ती और फटाफट जवाब देती।

चिन्टू-पिन्टू भी हँसते-खेलते जवाब दे रहे थे।

टीना टिटहरी से जब सुहानी ने पूछा 'भाव आस्रव किसे कहते हैं ?'

तब टीना ने मुँह लटकाये जवाब दिया "बुआ जी ! आप जो

भी पढ़ाती हैं, मुझे अच्छा तो लगता है, पर मुझे याद नहीं रहता।'' ऐसा कहकर वह जोर-जोर से रोने लगी।

''अरे टीना ! याद नहीं होता तो इसमें रोने की क्या बात है ?''

''बुआ जी मैं देखती हूँ चिंकी और चिन्टू पिन्टू सबको याद हो जाता है, पर मुझे याद नहीं होता।'' टीना ने रोते-रोते कहा।

टीना को रोता हुआ देखकर किट्टी कोयल हँसने लगी और बोली "इतना अच्छा पाठ याद नहीं होता तो तेरा कल्याण कैसे होगा ? तुझमें अक्ल ही नहीं है तो धर्म कैसे होगा ? तेरी जिन्दगी तो ऐसे ही रोते-रोते बीतेगी।"

यह बात सुनकर चिन्टू-पिन्टू भी टीना के ऊपर हँसते हुए कहने लगे "देखो मुझे तो याद हो गया, पर इस टीना को कुछ याद होता ही नहीं है। बस टिक-टिक करती रहती है।"

इन अपमान और मजाक के शब्दों को सुनकर टीना को और अधिक रोना आने लगा और वह क्लास छोड़कर भागने लगी।

सुहानी ने सभी को गुस्से में चुप कराते हुए टीना को अपने पास बुलाया और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा "बेटे! घबराओ नहीं। तुम कक्षा छोड़ कर भागो नहीं। तुम यहीं बैठो, धीरे-धीरे सब समझ में आ जाएगा।"

"नहीं बुआ जी! मेरी समझ में कुछ नहीं आता। मुझे कुछ याद ही नहीं रहता। मैंने कल का पाठ भी याद करना चाहा, आज भी मैं बहुत ध्यान से सुन रही हूँ; पर मुझे कुछ याद ही नहीं रहता। सात तत्त्व कौन-कौन से हैं, मेरी समझ में ही नहीं आता। ये सब मुझ पर सही ही हँस रहे हैं, आप इन पर नाराज नहीं हों। सच में मेरी ही अक्ल कम है, मेरी जिन्दगी बेकार जाने वाली है।" ऐसा कह कर टीना रोने लगी।

सुहानी को पता था कि टीना को सच में ये सब बातें याद नहीं रहतीं फिर भी उसने टीना का उत्साह बढ़ाते हुए कहा ‘‘अच्छा टीना ! यह बताओ यदि तुम किसी खेत में जाओगी और वहाँ यदि मूँगफली पड़ी हुई मिले तो उसे कैसे खाओगी ? क्या पूरी की पूरी खा जाओगी ?’’

‘‘नहीं बुआ जी ! पूरी की पूरी कैसे खा जाऊँगी ? मैं उस मूँगफली को अपनी चोंच में लेकर पहले किसी पत्थर पर ठोकर लगाऊँगी, उसको फोड़ूँगी।’’

‘‘अच्छा फोड़ करके सब खा जाओगी ?’’

‘‘नहीं बुआ जी ! आप कैसा मजाक कर रही हैं ? फोड़ कर जो छिलका है, उसे तो वहीं छोड़ दूँगी और उसमें जो दाने निकलते हैं, उनको खा जाऊँगी क्या मुझमें इतनी भी अक्ल नहीं है ?’’

‘‘अच्छा, और खेत में मटर की फली मिल जाये तो ?’’

‘‘यह तो पूरी मटर की फली खा जाएगी। अक्ल तो है ही नहीं।’’ हरिहर तोते ने टीना का मजाक उड़ाते हुए कहा।

‘‘हाँ- हाँ ! सारी अक्ल तो तेरे में ही है, तू चुप बैठा रह। मैं पूरी मटर कैसे खा जाऊँगी ? फली को पहले छीलूँगी, फिर दाने खाऊँगी, इतनी तो मुझमें अक्ल है।’’ टीना ने सबको आँखें दिखाते हुए कहा।

''शाबाश टीना! तुममें बहुत अक्ल है और इतनी ही अक्ल अपना कल्याण करने के लिए पर्याप्त है।''

''इतनी-सी अक्ल से क्या हो जाएगा? क्या परीक्षा में पास हो जाएगी? जब परीक्षा में ही पास नहीं होगी तो धर्म कहाँ से होगा? सुख कहाँ से मिलेगा?'' कालू कौआ ने कहा।

''सुख पाने के लिए इतनी ही अक्ल बहुत है।'' सुहानी ने कहा।

''क्या मतलब? इतनी अक्ल से हमें सुख मिल जाएगा? हमारा कल्याण हो जाएगा?'' टीना ने पूँछा।

''हाँ बेटे! जैसे तुमने मूँगफली में से छिलके को अलग जाना और दाने को अलग, मटर की फली में से छिलका अलग किया और दाना अलग किया। छिलका फैंकने लायक है, दाने खाने लायक हैं - ऐसा मानकर के छिलके को अलग करके दाना खा लिया और आनन्द ले लिया। बस इतनी अक्ल से ही आत्महित हो सकता है।''

''यह तो मूँगफली और मटर का आनन्द हुआ बुआ जी! इतनी अक्ल में आत्मा का आनन्द कैसे मिलेगा?'' किट्टी कोयल ने मधुर आवाज़ में विनम्रता से पूछा।

सुहानी ने समझाते हुए कहा ''बेटे! और कुछ याद रहे या ना रहे इतना जान लो कि यह जो शरीर है, जिसे लोग टीना कहते

हैं, टिटहरी कहते हैं, किट्टी, चिंकी, तोता कौआ कहते हैं यह मैं नहीं हूँ।

बस इस शरीर रूपी छिलके के अन्दर जो जान रहा है, जिसे इतना पता है कि दाना खाने लायक है, छिलका फैंकने लायक, जिसे यह पता है कि मुझे याद नहीं रहता, जिसे यह पता है कि मुझमें ज्यादा अक्ल नहीं है बस जिसे यह सब कुछ पता है, वही मैं हूँ, इसके अलावा मैं कुछ भी नहीं हूँ। जो जानने वाला है वही जीव है, वही मैं हूँ; बाकी सब छोड़ने लायक है, अपना मानने लायक नहीं है। इतना काम यदि कर लोगी तो तुम्हारा कल्याण हो सकता है।''

''अच्छा बुआ जी ! पर मुझे सात तत्त्वों के नाम तो याद होते ही नहीं हैं ?'' टीना ने कहा।

''कोई बात नहीं, यदि याद नहीं होते तो भी कोई दिक्कत नहीं। केवल इतने ज्ञान से भी हम अपना हित कर सकते हैं।'' सुहानी ने समझाया।

कालू कौवा काँव-काँव करते हुए बोला - ''तो फिर हमको सब क्यों रटाए जा रही हो ? हम भी बस मूँगफली खा लेंगे, हमें भी मटर छील करके खाना आता है, तो बस हम भी अपना कल्याण कर लेंगे। हमें घर जाने दो। हम घर जाकर टी.व्ही. देखेंगे और चिन्टू-पिन्टू के साथ खेलेंगे।''

"देखो बेटा! मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि तुम पाठशाला छोड़ कर घर चले जाओ। टीना के पास जितनी अकल है, वह पूरी यही बात समझने में लगा देगी, तो उसका कल्याण हो जाएगा; परन्तु कालू, तुम्हारे पास बहुत दिमाग है, तुम्हारा दिमाग शैतानी में जाता है, लड़ाई-झगड़े में जाता है, टी.व्ही. देखने और खेलने में जाता है तो इतने ज्यादा दिमाग वाले को केवल मूँगफली छीलकर खा ली या मटर छील कर खा ली इतना मानने से काम नहीं चलेगा। तुमको यह सब पढ़ना होगा, याद करना होगा, मानना होगा; तभी कल्याण होगा।" सुहानी ने हँसते हुए समझाया।

चिन्टू रुआंसा होकर बोला "मम्मी! ऐसा अन्याय हमारे साथ क्यों? टीना कुछ भी याद नहीं करे तो भी धर्म हो जाएगा, सुख मिल जाएगा और हमें यह सब क्यों पढ़ना पड़ेगा?"

"देखो बेटे! जिसके पास जितना ज्ञान है, वह पूरा समर्पित होकर यदि अपने आप में लगाएगा तो उसका काम हो जाएगा और यदि उसमें से कुछ बचा कर रखेगा तो काम नहीं होगा। बचत करता है, इसका मतलब उसके मन में बेईमानी है। 'बे' माने दो ईमान अर्थात् विश्वास। अपने विश्वास को दो जगह लगा रहा है इसलिए बेईमान है। वह धर्म भी करना चाह रहा और कर्म भी। जो - ऐसा करेगा, उसका हित नहीं होगा।

जिसके पास जितनी अक्ल है वह पूरी की पूरी अक्ल/ज्ञान-

श्रद्धान आत्मकल्याण में लगावे, जिनवाणी समझने में लगावे, तो उसको उतने-से ज्ञान से भी काम हो जाएगा।''

चिंकी चिड़िया ने कहा ''बुआ जी! आपकी पूरी बात समझ में आ गई। हम अपनी अक्ल, अपना पूरा दिमाग सत्य समझने में ही लगाएँगे।''

''शाबाश बेटे! टीना तुम भी बैठ जाओ, शान्ति से सुनो और सभी ध्यान रखो - कोई भी टीना की मजाक नहीं उड़ाना।

हमारे पास अभी जो ज्ञान है, वह घटता-बढ़ता रहता है। हो सकता है कि अभी कुछ ही दिनों में टीना को बहुत कुछ याद होने लग जाए और जो आपको अभी याद है, वह आप भूलने लग जाओ।'' सुहानी ने समझाया।

हरिहर तोता विस्मय पूर्वक बोला ''अच्छा बुआ जी! ऐसा भी हो सकता है?''

''हाँ बेटे! बिल्कुल हो सकता है, इसलिए हमें कितना भी अधिक ज्ञान हो, उसका घमण्ड नहीं करना चाहिए और यदि कम ज्ञान है, तो दुःखी भी नहीं होना चाहिए। बस इतनी-सी बात है।

चलो बच्चो! कक्षा का समय समाप्त।''

चिंकी ने नारा लगाया - ''एक साथ बोलिये जय जिनेन्द्र।''

सभी बच्चे बोले - जय जिनेन्द्र। ❖❖❖

6

प्रकृति

आनन्द–विहार परिवार के सदस्य सायंकाल चहल–कदमी करते हुए बातचीत कर रहे थे। चिन्टू ने आकर सुहानी से कहा "मम्मी! हम आज फतेहसागर तरफ घूमने गए थे। वहाँ देखा तरह–तरह की दुकानें हैं, परन्तु लोग तो बहुत ही कम संख्या में वहाँ थे; तो जब कोई दुकान पर आता ही नहीं, तो उन दुकानदारों का क्या होता होगा?"

चिन्टू की बात सुनकर वहीं बैठा हुआ लल्लू उल्लू बोला "बेटे! तुम अभी बहुत छोटे हो शायद पहली बार उधर घूमने गए हो। जब तुम आराम करोगे और मैं घूमने निकलूँगा तब वहाँ पर बच्चे –जवान–बूढ़े सभी दौड़े आते हैं और कोई चाट–पकौड़ी तो कोई चाऊमीन, पिज्जा आदि खाते हैं। रात को वहाँ की रौनक देखते ही बनती है।"

"अच्छा! ऐसा है? लल्लू चाचा हमें भी कभी घुमाने ले चलना, हम भी वहाँ की रौनक देखना चाहते हैं।" पिन्टू ने कहा।

"नहीं बेटे! हम रात को अपने घर से बाहर नहीं निकलते।" सुहानी ने कहा।

"ऐसा क्यों माँ? जब इतने लोग फतेहसागर पर आते हैं, खाते हैं तो हम क्यों नहीं जाते?" चिन्टू ने पूछा।

"देखो बेटा! प्रकृति ने चौबीस घण्टे में दिन और रात बनाए हैं। दिन का समय अपना काम करने, खाने-पीने, घूमने-फिरने के लिए है। रात्रि का समय विश्राम के लिए है। हमारे आनन्द-विहार परिवार में ही नहीं, कहीं पर भी हमारी जाति का पशु-पक्षी रात्रि में भोजन नहीं करता, घूमता-फिरता नहीं है, अपने ही घर में रहता है। जो रात्रि में घूमते-फिरते और भोजन करते हैं, उन्हें 'निशाचर' कहा जाता है।"

"पर मम्मी! ये मनुष्य तो रात को घूमने आते हैं। लल्लू चाचा

बता रहे हैं कि वहाँ इतनी रौनक होती है, सब तरह-तरह की चीजें खाते हैं, तो हमें रात में क्यों नहीं खाना चाहिए?"

"देखो बेटा! तुम मनुष्य बनने की कोशिश मत करो। मनुष्य जिनवाणी के प्राकृतिक नियमों को तोड़कर जनवाणी के अनुसार मनमानी करता है, इसीलिए उसके जीवन में कुछ समय की रौनक तो होती है; परन्तु फिर बहुत विपत्तियाँ उसके जीवन में आती हैं। अभी यह कोरोना नाम की बीमारी जो फैली, जिसके कारण हमारी तरह ही मनुष्यों को भी अपने घरों में ही महीनों रहना पड़ा, उसका कारण वे स्वयं हैं।

हम कभी भी प्रकृति के विरुद्ध नहीं चलते, इसलिए हमें कोई रोग आदि नहीं होता और हम स्वस्थ-प्रसन्न रहकर जीवन व्यतीत करते हैं।"

किट्टी कोयल ने कहा "हाँ बुआजी! यह बात तो सही है। मैं भी जब भी शहर तरफ घूमने जाती हूँ तो देखती हूँ कि जगह-जगह आदमियों के लिए अस्पताल बने हुए हैं और वहाँ लाइन लग रही है, जबकि हमारे जंगल में, खेतों में हमारे लिए तो कहीं कोई अस्पताल नहीं है।"

"हाँ बेटे! हमारे लिए अस्पताल की जरूरत ही नहीं है; क्योंकि हम अपनी प्रकृति के विरुद्ध कभी चलते नहीं हैं। जो अपनी प्रकृति अर्थात् स्वभाव के विपरीत काम नहीं करता, उसे

कभी रोग आदि होते ही नहीं है, चिन्ता होती ही नहीं है, तनाव होता ही नहीं है, वह सदा स्वस्थ और प्रसन्न रहता है।'' सुहानी कबूतरी ने कहा।

कालू कौवा काँव–काँव करते हुए बोला ''पर मैंने तो उदयपुर में एक अस्पताल देखा है, जो पशु–पक्षियों के लिए है और आप कह रही हैं, हमारे लिए रोग होते ही नहीं हैं। मैं भी देख रहा हूँ कि हममें से कोई कभी बीमार होता नहीं है, तो फिर वह अस्पताल क्यों बनाया गया है?''

''देखो बेटा! जो अस्पताल हमारे नाम से बनाया गया है, वह भी इन मनुष्यों की बदौलत ही बनाना पड़ा है। यह मनुष्य अपनी गाड़ियों से हम पशु–पक्षियों को घायल कर देते हैं, पतंग उड़ाकर, पटाखे जलाकर हमें घायल कर देते हैं, गन्दा भोजन इधर–उधर फैलाकर हमें बीमार कर देते हैं, इसलिए अस्पतालों की जरूरत है।

अभी लल्लू भैया ने कहा कि फतेहसागर पर इतनी रौनक होती है, वे लोग वहाँ जाकर चाऊमीन, पिज्जा, चाट–पकौड़ी खाते हैं, उनको नहीं पता कि उनमें कितनी गन्दी चीजें रहतीं हैं, किन गन्दे हाथों से लोग बनाते हैं, वे सब चीजें केवल देखने, सूँघने और स्वाद में अच्छी दिखती हैं, वास्तव में तो वे सब बीमारियों के घर हैं।''

"बुआजी! आदमी तो बहुत होशियार है, फिर ऐसी गलती क्यों करता है?" हरिहर तोते ने पूछा।

"बेटा! स्वाद और शौक के चक्कर में यह होशियार और समझदार आदमी बेवकूफी भरे काम करता है। यह स्वयं अपने पाँव पर कुल्हाड़ी पटकता है। जब केवल दिखने भर की सुन्दर, स्वादिष्ट चीजों को रात में खाता है, तो उस समय अनेक कीड़े-मकोड़े उस खाने में गिरते हैं, जिनके कारण अनेक बीमारियाँ इसे होती हैं, भोजन पचता नहीं है, जिससे पेट की कई बीमारियाँ होती हैं, और फिर अस्पताल में भर्ती रहना पड़ता है। यदि वह भोजन अपने 'आनन्द-विहार' में आ जाए तो तुम लोग सूँघोगे भी नहीं; पर यह समझदार आदमी उनको खा-खाकर अपना पैसा, समय और स्वास्थ्य खराब कर रहा है।"

"मम्मी! मेरी समझ में सब आ गया। जो अपनी प्रकृति को भूल कर, अपनी संस्कृति के विरुद्ध काम करता है, जो बिना विवेक के, केवल दिखावे में जाकर खाता-पीता है, वह अपना समय, धन और स्वास्थ्य खराब करता है – ऐसा आदमी धर्म तो क्या कर सकेगा?" चिन्टू ने कहा।

"बिल्कुल सही कहा बेटे तुमने। जिसे खाने-पीने का विवेक नहीं, जीवों पर दया नहीं, दिन-रात पाप करके कमाता है और केवल अपने शौक के लिए खाता-पीता, घूमता-फिरता है, उसे

धर्म हो ही नहीं सकता और जिसे धर्म नहीं मिलेगा, उसे सुख और शान्ति तो जीवन में कभी मिलेगी ही नहीं।'' सुहानी ने कहा।

''मम्मी! हमें कहीं घूमने नहीं जाना। अपने आनन्द-विहार में ही रहना और खेतों में जाकर दाना चुगना ही अच्छा है। हम कभी इन लोभी, भोगी, स्वार्थी मनुष्यों जैसा प्रकृति विरुद्ध खान-पान आदि नहीं करेंगे।'' पिन्टू कबूतर ने कहा।

''शाबाश बच्चो! आपका जीवन मंगलमय हो यही कामना है।'' सुहानी ने सभी को शुभकामनाएँ दीं। सब अपने-अपने घोंसलों में आराम करने चले गये। ❖❖❖

गीत

धन-पद-यश को पाकर चेतन, मान शिखर चढ बैठे हो।
मान छोड़, देखो समान, मित्रो! तब कुछ बात बने।।
निज-घर भरने लगे रात-दिन, सत्यासत्य नहीं दिखता।
परहित करने माल लुटाओ, मित्रो! तब कुछ बात बने।।
अरे! रात-दिन जागा करते, जड़ वैभव को पाने को।
जड़ तज तुम, चेतन हित जागो, मित्रो! तब कुछ बात बने।।
पर-ज्ञेयों से लाभ मानकर, उन्हें जानने भाग रहे।
निज 'ज्ञायक' को 'ज्ञेय' बनाओ, मित्रो! तब कुछ बात बने।।
पंचेन्द्रिय के विषय-भोग में, चेतन आनंद मान रहा।
'ज्ञानानन्द' चखोगे जब तुम, मित्रो! तब कुछ बात बने।।
परिजन-पुरजन के हित बंधु! अर्पण अब तक कीना है।
निज-हित हेतु करो 'समर्पण', मित्रो! तब कुछ बात बने।।

7

माता-पिता का कर्त्तव्य

''मम्मी! मम्मी! आज हम शहर में घूमने गए थे, तो हमने देखा कि एक घर के कमरे में दीवाल पर एक डिब्बा सा टँगा हुआ था, जिसमें तरह-तरह के नाच-गाने, लड़ाई-झगड़े के चित्र दिख रहे थे। पूरा परिवार बड़ी तन्मयता से देख रहा था और वहीं एक छोटा सा बच्चा भूख के कारण रो रहा था लेकिन उसकी मम्मी उसकी ओर देख ही नहीं रही थी।'' चिन्टू ने आश्चर्य से कहा।

''हाँ बुआजी! इतना ही नहीं, हम जब उड़कर दूसरे घर की छत पर पहुँचे तो वहाँ देखा, एक छोटा-सा बच्चा हाथ में छोटा-सा डिब्बा लिए उसमें कुछ देख रहा था, उँगलियाँ चला रहा था और उसकी मम्मी अन्दर बुला रही थी – 'बेटा! अन्दर आओ, भोजन तैयार है, भोजन कर लो'। लेकिन वह बच्चा तो गर्दन ऊँची ही नहीं उठा रहा था। तब मम्मी आई और उसने जोर से उसको चाँटा लगाया और उठाकर अन्दर ले गई।'' हरिहर तोते ने बताया।

''अरे बुआजी! यही ही नहीं; मैं तो जिस घर की तरफ गया था वहाँ देखा तो दस-बारह साल का एक लड़का मम्मी से

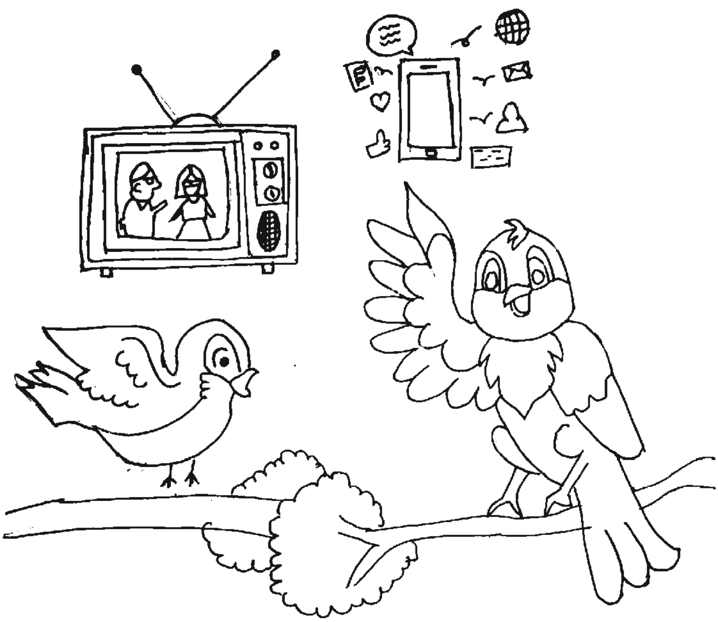

'चिल्ला-चिल्ला कर कह रहा था' 'मम्मी! मुझे मोबाइल दे दो, अगर मुझे मोबाइल पर गेम नहीं खेलने दिया तो मैं छत से कूदकर मर जाऊँगा।' बुआजी ये मोबाइल क्या होता है?'' कालू कौआ बोला

''बुआजी! शहर में यह सब हर घर में होने लगा है। पहले मैं जब जाती थी और किसी आँगन में फुदकती थी तो छोटे-छोटे बच्चे दौड़कर आते थे और गाने लगते थे 'चूँ चूँ चूँ चूँ चिड़िया चहकी' और पकड़ने के लिए दौड़ते थे। हमें भी मजा

आता था, हम उड़कर ऊपर खिड़की पर आ जाते, फिर कभी सीढ़ी पर चले जाते, कभी आँगन के किसी कोने में चले जाते और बच्चे दौड़-दौड़ कर पकड़ने की कोशिश करते थे; कोई -कोई हमें दाना भी डाल देते थे, पर आजकल तो जब भी जाओ तो किसी भी आँगन में बच्चे दिखते ही नहीं हैं। कहीं बच्चे दिखते भी हैं तो डिब्बी पकड़े हुए। बस सबकी नजर उसी पर अटकी रहती है।'' टीना टिटहरी ने कहा।

''कोरोना के कारण इन दिनों ऑफिस और स्कूल भी नहीं चल रहे, तो भी सब अपने घर में बन्द हैं। कोई दीवाल के डिब्बे को देख रहा है, तो कोई हाथ के डिब्बे को देख रहा है। समझ ही नहीं आता कि उस डिब्बे में - ऐसा क्या भरा है। मैं तो एक बच्चे की थाली में से रोटी लेकर आ गया और उसे पता ही नहीं चला।'' कालू की बात सुनकर सभी हँसने लगे।

''हाँ! और इसी बात को लेकर भाई-बहन भी लड़ते-झगड़ते रहते हैं कि मुझे मोबाइल चाहिए, मुझे चाहिए, मैं खेलूँगी, मैं खेलूँगा। पता नहीं क्या खेलते हैं? किसी के पास न गेंद, न बल्ला, न गिल्ली, न डण्डा फिर भी पता नहीं क्या खेलते हैं? हाथ-पाँव हिलाए बिना, दौड़-भाग बिना क्या खेल है? कैसे इन बच्चों की तबियत सही रहेगी? कैसे इनका शारीरिक-मानसिक विकास होगा मेरी तो समझ में नहीं आता?'' किट्टी कोयल ने कहा।

"अरे बच्चो! तुम तो दिन के हाल देखकर डर गए, लेकिन मैं तो रात को जाता हूँ तो रात में भी लोग या तो दीवाल का डिब्बा या हाथ का डिब्बा बस उन्हीं को देखने में लगे रहते हैं। किसी के हाथ में किताब नहीं दिखती, कोई आपस में बातचीत करते नहीं दिखता, कोई काम करते नहीं दिखता, तो मेरा भी मन हो जाता है कि मैं भी क्यों काम करूँ? और एक डाल पर चुपचाप बैठ जाता हूँ।" लल्लू उल्लू ने कहा।

"मम्मी! मम्मी! ऐसा एक डिब्बा हमें भी दिला दो ना। हम भी आदमियों की तरह खेलेंगे।" पिन्टू ने कहा।

"बच्चो! तुम शहर में आदमियों के बीच जाकर आदमी बनने की कोशिश मत करो। यदि इन आदमियों जैसी आदतें बनाओगे, उन जैसे शौक करने लगोगे तो तुम आदमी तो बन नहीं पाओगे, उन्मुक्त गगन में स्वतंत्रता से उड़ने वाले पक्षी भी नहीं रह जाओगे। तुम्हारे जीवन में भी लड़ाई-झगड़े होने लगेंगे और बस एक कोने में बैठकर रह जाओगे। अभी तुम सब कैसे नीले आसमान के नीचे घूमते-फिरते हो, एक पेड़ से दूसरे पेड़ की डालियों पर उछलते-कूदते हो, तुम्हारी चहचहाहट से पूरा आनन्द-विहार गूँजता रहता है, सब तुम्हारे पंख फड़फड़ाने की आवाज को सुनकर खुश होते हैं और तुम भी कितने प्यार से एक साथ रहते हो, खेलते-कूदते हो, यहाँ आनन्द-विहार में

शाम को बैठकर सुख–दुःख की बातें करते हो।'' सुहानी कबूतरी ने समझाया।

''हाँ बुआजी ! यह बात तो है। मैंने तो शाम को भी देखा है कि बगीचे में भी लोग या तो आते ही नहीं हैं और आते हैं तो बेंच पर बैठकर चाहे बुड्ढा–बुड्ढी हों, चाहे जवान पति–पत्नी, वे भी आपस में सुख–दुःख की बातें नहीं करते, बस जादू की डिब्बी ही लेकर बैठ जाते हैं।'' चिंकी चिड़िया ने कहा।

''हाँ बच्चो ! बस इसीलिए कह रही हूँ, वह जो जादू की डिब्बी है, उसे ही मोबाइल कहते हैं। इन आदमियों ने यह मोबाइल बनाया था कि पराधीनता छूट जाए और वह घर बैठे दूर–दूर के रिश्तेदारों से बातें कर सकें, अपने व्यापार के काम कर सकें; आदमी आने–जाने की पराधीनता से तो बच गया, परन्तु उस मोबाइल के ही अधीन हो गए।

जो दीवाल पर डिब्बा टँगा था, उसे टेलीविजन कहते हैं। उसमें दूर–दूर के समाचार उनको पता चलते हैं। दूसरों के नाच–गाने देखते रहते हैं, परन्तु घर में क्या हो रहा है इसका उन्हें पता ही नहीं चलता। दूर देशों में जो उनके कुछ नहीं लगते, उनकी खबर तो है, पर बगल में बच्चा रो रहा है, उसकी खबर नहीं है, पड़ोस में कोई दुखी है/बीमार है, उसका उन्हें पता नहीं है, अपनों की उन्हें चिन्ता नहीं है। उस डिब्बे से दूर के दर्शन करते

हैं और अपनों से दूर होते चले जाते हैं।'' सुहानी ने गम्भीरता पूर्वक कहा।

''हाँ बुआजी! यह बात तो है। शहर में भीड़ बहुत है, बाजार में, सड़क पर चारों तरफ आदमी ही आदमी दिखते हैं; पर उनमें से किसी को किसी से प्रेम हो, किसी की चिन्ता हो – ऐसा दिखाई नहीं देता; जबकि यहाँ तो हरिहर भैया या कालू भैया की बस आवाज आ जाए तो हम सब इकट्ठे हो जाते हैं।'' टीना टिटहरी ने कहा।

''हाँ बच्चो! टीना ने बिल्कुल सही कहा। हमें दूर का पता नहीं है, लेकिन अपनों का पता है। जिन्हें अपनों का पता होता है, वे बहुत जल्दी अपना पता भी कर लेते हैं; लेकिन जिन्हें अपनों का ही पता नहीं है, अड़ोस-पड़ोस की ही खबर नहीं है, अपने बच्चों के भविष्य की ही चिन्ता नहीं है, केवल पैसा कमाने, नाच-गाना देखने में ही लगे हुए हैं, उनके बच्चे भी उस हाथ वाली डिब्बी, जिसे कि मोबाइल कहते हैं, उसमें ही उलझ कर अपनी आँखें, अपना दिमाग, अपना समय खराब कर रहे हैं।

जब उस बच्चे के मम्मी-पापा उसे समय नहीं दे रहे हैं तो बुढ़ापे में वह बच्चा भी उन्हें समय नहीं देगा, बस एक डिब्बी उनके हाथ में पकड़ा देगा या उनके कमरे में डिब्बा लटका

देगा।'' सुहानी की बात सुनकर सभी, मनुष्यों पर व्यंग्यपूर्ण दृष्टि से हँसने लगे।

''टेलीविजन और मोबाइल देखते रहने का इतना बुरा भविष्य होगा?'' चिन्टू ने आश्चर्य से पूछा।

''हाँ बेटा! भविष्य बुरा होगा नहीं हो रहा है। वे सब बहुत तनाव में, डिप्रेशन में जीते हैं, जिसके कारण वे आपस में हत्याएँ करते हैं, चोरी करते हैं, शराब पीते हैं, यहाँ तक कि आत्महत्या कर लेते हैं।'' सुहानी ने समझाया।

''अरे बाप रे! ये आदमी इतना समझदार होकर भी इतनी नासमझी का काम करता है, मुझे तो कुछ पता ही नहीं था, शायद इसीलिए सब मुझे उल्लू कहते हैं।'' लल्लू ने कहा।

''बच्चो! तुमने कभी सुना कि किसी तोते ने आत्महत्या की। कौए ने आत्महत्या की। मोर या कबूतर ने पेड़ से कूद कर आत्महत्या कर ली? नहीं। क्योंकि हमें अपने काम के अलावा और अपनों के अलावा किसी दूसरे की व्यर्थ की चिंता नहीं है, तनाव नहीं है। हम आज खा-पीकर आ गए हैं, तो कल की चिंता नहीं करते। हमारे भाग्य में जो होगा वह मिलेगा ही।

हम कल के लिए एक दाना भी नहीं जोड़ते, जबकि यह आदमी सात-सात पीढ़ियों के लिए जोड़कर रखने की चिन्ता

में रहते हैं और इसलिए दु:खी रहते है। और टेलीविजन मोबाइल पर जो कार्यक्रम आते हैं, वे सब इस आदमी की पद और पैसे की भूख को बढ़ाते ही जाते हैं, जिसके कारण भाई, भाई का हत्यारा हो जाता है।

अत: माता-पिता का कर्त्तव्य यह है कि अपने बच्चों को समय देकर अच्छे संस्कार दें। उन्हें संस्कार देने से पहले आवश्यक है कि वे स्वयं संस्कारित हों, अपनी जिम्मेदारी से बच कर टी.व्ही. और मोबाइल में स्वयं लगे रहने और बच्चों को भी इनमें लगा देने से तो उनका वर्तमान और भविष्य दोनों बिगड़ने वाले हैं। इसलिए मैं तो ऐसा डिब्बा यहाँ कभी नहीं लाऊँगी।'' सुहानी ने हँसते हुए कहा।

''मम्मी! हम तो आपके पास ही रहना चाहते हैं, आप से ही सब कुछ सीखना चाहते हैं, शान्ति से जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। हमें कोई-सा भी डिब्बा नहीं चाहिए। हमें कोई परिग्रह नहीं जोड़ना, चिन्ता-तनाव में जीवन नहीं जीना। जितना भी जिएँगे शान्ति से जिएँगे, आनन्द से जियेंगे, आनन्द-विहार के सब पक्षी परिवार साथ मिलकर के रहेंगे। क्यों चिंकी दीदी! है ना ?'' चिन्टू ने मुस्कुराते हुए कहा।

''हाँ चिन्टू-पिन्टू! हम सब किट्टी-टीना-हरिहर-कालू-लल्लू चाचा सब साथ हिल मिलकर के रहेंगे, अपना काम समय

पर करेंगे, अपना काम स्वयं करेंगे, आवश्यकता पड़ने पर दूसरों की सहायता करेंगे और हमेशा मुस्कुराते रहेंगे।'' चिंकी ने पंख फड़फड़ा कर कहा।

''शाबाश बच्चो! स्वस्थ रहो, प्रसन्न रहो। चलो, अब सभी आराम करें।'' सुहानी ने कहा।

सभी जय-जिनेन्द्र कहकर अपने-अपने घोंसले में चले गए।

❖❖❖

लक्ष्य उसे ही मिलता है

बिना रुके अरु बिना थके जो, नित प्रति बढ़ता रहता है।
भले दूर हो लक्ष्य मगर, चलने वाले को मिलता है।।
आलस सबसे बड़ा शत्रु है, मित्र! इसे ना अपनाना।
अहंकार भी रिपु ही समझो, नहीं पास इसके जाना।।
तज कर आलस गर्व भाव जो, धीरे धीरे चलता है।।1।।
शक्ति निज पहचानो पहले, फिर तुम अपना कदम बढ़ाना।
देखा-देखी और दिखावे के चक्कर ना पड़ जाना।।
निज शक्ति अनुसार चले जो, लक्ष्य उसे ही मिलता है।।2।।
असफलता से ना घबराना, बाधाओं से जा टकराना।
हिम्मत-होश हमेशा रखना, न अनीति पथ पर जाना।।
न्याय-नीति पर जो चलता है, सुख उसको ही मिलता है।।3।।
पद-पैसा सब मिले भाग्य से, बात नहीं यह बिसराना।
फिर भी नित पुरुषार्थ करो अरु, अहंभाव ना मन लाना।।
न हताश न हो निराश जो, लक्ष्य उसी को मिलता है।।4।।
धन-पद-यश न मात्र लक्ष्य हो, लक्ष्य हो निज पर हित करना।
ज्ञानदीप द्योतित कर अंतर, जग का मोह तिमिर हरना।।
मिथ्यातिमिर मिटाता वह जो, ज्ञानदीप बन जलता है।।5।।

8

लालच

चिन्टू और पिन्टू घबराए हुए, दौड़ते–भागते घर पर आए और सुहानी से कहने लगे ''मम्मी! मम्मी!''

''अरे बेटा! इतना घबराए हुए क्यों हो? क्या हुआ?''

''मम्मी! हम अभी जंगल में थे।'' हाँफते हुए चिन्टू ने कहा।

''तो क्या हुआ?''

''मम्मी वहाँ पेड़ पर एक मधुमक्खी का छत्ता लगा हुआ था।'' चिन्टू ने कहा।

''तो इसमें क्या हुआ? जंगल में तो मधुमक्खियों के छत्ते होते ही हैं।''

''अरे मम्मी! वहाँ पर एक आदमी आया। वह काले कपड़े पहने हुए था, उसके हाथ में आग थी। वह उस पेड़ पर चढ़ गया और उसने उन मधुमक्खियों को जला दिया, उसमें से कुछ मधु-मक्खियाँ भाग गईं और बाकी वहीं चट–चट करके जल गईं और फिर.....।''

''फिर क्या हुआ?''

''फिर उस आदमी ने उन मधुमक्खियों द्वारा इकट्ठा किया

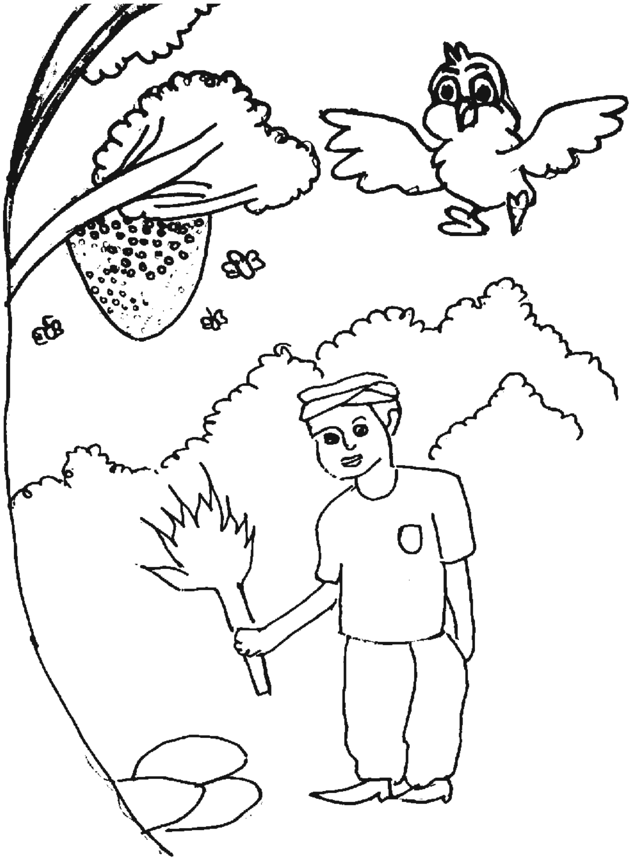

गया शहद निचोड़ कर अपने बर्तन में भर लिया। मम्मी, मुझे तो यह देखकर रोना आ गया। वे मधु–मक्खियाँ कहाँ–कहाँ से एक–एक बूँद शहद इकट्ठा करती हैं और वह निर्दयी आदमी उसको लेकर चला गया और मधुमक्खियाँ बेकार में ही जलकर

मर गईं।'' पिन्टू यह कहते–कहते रोने लगा।

''देखो बेटा! उस लुटेरे ने अच्छा नहीं किया, उसे बहुत पाप लगेगा। जो दूसरों की वस्तुओं को छीनता है, उठाता है, चुराता है, वह चोर है। इस लुटेरे ने तो चोरी भी की और मधुमक्खियों को जलाकर हिंसा भी की, जिसके कारण उसे बहुत दुख होगा। हमें ऐसे कार्य कभी नहीं करना चाहिए।

इसी बात से दूसरी शिक्षा यह भी मिलती है कि जो कंजूस होते हैं, लोभी होते हैं, उनकी यही दशा होती है। जो केवल इकट्ठा करना जानते हैं, न तो वे स्वयं काम में लेते हैं और ना ही दूसरों को देते हैं, उनकी सम्पत्ति इसी तरह नष्ट हो जाती है।''

''अच्छा मम्मी! ऐसा है?''

''हाँ बेटा! मनीषियों ने कहा है –

दानं भोगो नाशस्तिस्त्रो गतयो भवंति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुंक्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति।।
धन की गतियाँ तीन हैं, दान–भोग अरु नाश।
दान–भोग जो ना करे, निश्चित होय विनाश।।

''मम्मी! इसका मतलब क्या है?''

सुहानी ने चिन्टू–पिन्टू को गोद में बैठाकर समझाते हुए कहा ''बेटा! विचारक कहते हैं कि धन की तीन स्थितियाँ होती हैं –

दान अर्थात् अच्छे काम के लिए परोपकार की भावना से दूसरों को देना; अपने काम में लेना, और जो ये दोनों काम नहीं करता, उसकी सम्पत्ति नष्ट हो जाती है।''

''अरे वाह! यह तो आपने बहुत अच्छी बात बताई।'' चिन्टू ने कहा।

''देखो बेटा! यदि पुण्य के उदय से हमें धन मिला है तो परोपकार में उस धन को लगाना चाहिए, हमारी सम्पत्ति और साधन दूसरों के काम आ सकें – ऐसा कार्य हमें करना चाहिए और अपनी सुख–सुविधा के लिए भी उनका उपयोग करना चाहिए।

जो व्यक्ति यह काम नहीं करता है उसकी सम्पत्ति नष्ट हो जाती है या उस व्यक्ति की आयु पूर्ण हो जाती है और वह सब सम्पत्ति छोड़ कर के चला जाता है।''

''अच्छा मम्मी! – ऐसा है।''

''हाँ बेटा! देखो मधुमक्खियों ने शहद जोड़ा। पर न तो वह किसी को लेने देती हैं, न ही स्वयं उसका उपयोग करती हैं, तो अन्त में वह चला गया और प्राण गये वह अलग।''

''अच्छा मम्मी! इसका मतलब हमें लोभ नहीं करना चाहिए/ लालच नहीं करना चाहिए। हमें जो कुछ मिला है वह अपने और दूसरों के उपयोग में लाना चाहिए। नहीं तो यह सब यहीं छूट जाएगा।'' पिन्टू ने कहा।

"हाँ बेटा ! बिल्कुल सही समझे। तुम खूब उदारतापूर्वक दूसरों का सहयोग करना और न्याय–नीतिपूर्वक उपभोग करना और सुखी रहना।"

सुहानी ने यह सीख देते हुए प्यार से चिन्टू–पिन्टू को अपनी गोद में सुला लिया। ❖❖❖

मेरा काम सदा चलना है।

एक जगह पर ठहर गया जो।
मंजिल से रह गया, दूर वो।।
कदम लघु हों, पर चलना है।।1

बहा नहीं जल, सड़ जाएगा।
अश्व चला न अड़ जाएगा।।
रहूँ अकेला; पर चलना है।।2

मिले सफलता तो सब आते।
असफल होने पर धकियाते।।
मुझे नहीं पर को लखना है।।3

दुनिया की है रीत निराली ।
ऊपर उजली भीतर काली ।।
इस दुनिया से बच चलना है।।4

देखादेखी कभी न चलता।
नहीं दिखाने को मैं चलता।।
निज हित हेतु ही चलना है।।5

९

हिंसा

आज 'नभचर युवा मण्डल' के सदस्य बड़े गुस्से में थे और 'आनन्द-विहार' में उनकी मीटिंग चल रही थी। आज दोपहर में पड़ोस के ही लालू कौए ने आकर किट्टी कोयल को छेड़खानी करके परेशान किया, जिसकी खबर लगने पर पूरा नभचर मण्डल एकत्र हुआ था।

गुस्से में चिन्टू ने कहा "हम सबको संगठित होकर लालू कौए को पकड़कर, जमकर पिटाई करना चाहिए।"

टीना टिटहरी ने भी कहा "मेरा भी यही विचार है। हमें अन्याय सहन नहीं करना चाहिए, क्योंकि जहाँ अन्याय करना अपराध है, वहीं अन्याय सहना भी एक अपराध ही है।"

कालू कौवा भी आवेश में था। लालू उसका सजातीय था, परन्तु पड़ोस से आकर आनन्द-विहार परिवार के सदस्यों को कोई परेशान करे यह उसे भी बर्दाश्त नहीं था। उसने कहा "हम सब एक योजना बनाते हैं। मैं कल बगल के ही जंगल में जाकर काँव-काँव करके लालू को बुलाऊँगा। लालू यह समझेगा कि मुझे कुछ खाने को मिला है इसलिए मैंने बुलाया है और जब वह मेरे पास आ जायेगा तब मैं उसे बातों में लगा लूँगा। तभी तुम सब

एक साथ वहाँ आ जाना और उसको पकड़ कर हम जमकर धुनाई करेंगे कि बच्चू को नानी याद आ जायेगी।''

हरिहर तोते ने कहा ''कालू भैया सही कह रहे हैं। हमें उसे

सबक सिखाना ही चाहिए।''

युवा मण्डल की बातें सुहानी भी सुन रही थी। सुहानी ने प्यार से कहा ''बच्चो! आप लोगों को आवेश आना उचित है परन्तु आप जो योजना बना रहे हैं, वह उचित नहीं है।''

''मम्मी! आप क्या उचित-अनुचित करती रहती हो ? हमारी किट्टी दीदी को कोई छेड़ कर चला जाए और हम हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहें - ऐसा नहीं होगा। हम उसे जिन्दा नहीं छोड़ेंगे।'' चिन्टू ने आवेश में आते हुए कहा।

''बेटा! इस प्रकार से किसी को मारने की भावना करना संकल्पी हिंसा है, बहुत बड़ा पाप है।

आप सभी उसे मारने का विचार कर रहे हैं। हो सकता है कल लालू वहाँ हो ही नहीं या कालू के बुलाने पर वह आवे ही नहीं या आ भी जाए, पर जब तुम मारने के लिए जाओ तो वह भाग जाए और उसका बाल भी बाँका न कर सको; फिर भी तुम सबको आज से ही उसे मारने के भाव का पाप लगना चालू हो गया। यह हमें ऐसे भावों से बचना चाहिए।''

''मम्मी! आप अपनी हिंसा-अहिंसा अपने पास रखो। जब हम काम करने के लिए जाते हैं, व्यापार आदि कार्य करते हैं, दौड़ते-भागते हैं और आप भोजन तैयार करती हो तो क्या इनमें हिंसा नहीं होती ? कोई छोटे-मोटे जीव-जन्तु नहीं मरते ? तब

तो आप नहीं कहती हो कि हिंसा होती है और आज हमारे लिए आप समझा रही हो कि हिंसा होती है।'' पिन्टू ने गुस्से में कहा।

''बेटा! तुम्हारी बात सही है। जब हम कोई व्यापार करते हैं, दुकान करते हैं, तब सावधानी रखते हुए भी जीव मर सकते हैं, पर वह उद्योगी हिंसा है और घर पर झाड़ू लगाते, खाना बनाते हैं, तब भी हिंसा होती है, वह आरम्भी हिंसा है; परन्तु हम घर गृहस्थी में रहते हुए इस तरह की हिंसा से बच नहीं सकते। बेटा! सावधानी रखते हुए भी जो हिंसा होती है, वह भी पाप है इसीलिए हम आलोचना पाठ, प्रतिक्रमण पाठ पढ़कर उस पाप की भी क्षमायाचना करते हैं।''

चिंकी चिड़िया ने बहुत ही विनम्रता से कहा ''बुआ जी आप यह सही कह रही हैं, क्योंकि यदि हम काम-काज करने नहीं जाएँगे, तो हमारी आजीविका कैसे चलेगी? घर में सफाई करने, नहाने-धोने और खाना बनाने, आग जलाने और सामान लाने में हिंसा तो होती ही है, जिससे बचना मुश्किल है; परन्तु बुआजी यदि कोई हमारे परिवार पर हमला करने आ जाए, तो क्या हमें अपनी सुरक्षा का उपाय नहीं करना चाहिए?''

''हाँ! हाँ! मम्मी, आप तो कह दो कि यदि हम सुरक्षा का उपाय करेंगे तो हिंसा होगी। हमें तो कोई मारने आवे तो अपनी

गर्दन नीची करके उसके सामने कर देना चाहिए। कल लालू आएगा तो हम उसके सामने चले जाएँगे और कह देंगे – भैया आओ और मेरी गर्दन मरोड़ दो।'' चिन्टू ने गुस्से में कहा।

''चिन्टू! इतना गुस्सा अच्छा नहीं है। कोई हमारे परिवार पर आक्रमण करने आएगा, हमारे आनन्द–विहार के किसी भी बच्चे का बाल–बाँका करने के लिए आएगा, तो हम सब पूरी ताकत के साथ उसकी सुरक्षा करेंगे। अपने परिवार की सुरक्षा करते हुए यदि कोई घायल हो जाता है या मर भी जाता है, तो वह विरोधी हिंसा कहलाती है और वह इस गृहस्थ जीवन में हो सकती है, यह उतना बड़ा पाप नहीं; परन्तु किसी विरोधी, शत्रु को भी मार डालने का संकल्प करना – यह बहुत बड़ा पाप है। हमें पापी को नहीं, उसके मन के पाप को मारना चाहिए, बुराई को मारना चाहिए।'' सुहानी ने प्रेम से समझाया।

कालू कौए ने सुहानी की बात सुनकर पूछा ''बुआ जी! मेरी समझ में यह बात नहीं आई कि जब हम लालू को पीटने जा रहे हैं, तो आप मना कर रही हो और यदि वह घर पर झगड़ा करने आए और सुरक्षा करते हुए वह मर भी जाए तो आप कह रही हो कि वह इतना बड़ा पाप नहीं है। यह अन्तर क्यों?''

''हाँ बेटा! यही बात समझने की है, जब हम किसी को

संकल्प पूर्वक मारने की भावना भाते हैं, किसी को नुकसान पहुँचाने की भावना भाते हैं, तो वह संकल्पी हिंसा है। वह बहुत बड़ा पाप है, उसका हम सब को त्याग करना चाहिए। और हमारे परिवार या हमारे धर्म–स्थानों को कोई नुकसान पहुँचाने आया है, तो उसकी सुरक्षा के लिए हम जो उपाय करते हैं, उस उपाय को करते हुए यदि किसी को चोट लग जाए या किसी की मृत्यु भी हो जाए, तो वह विरोधी हिंसा कहलाती है। यह हिंसा हम गृहस्थ जीवन में रहते हुए नहीं छोड़ सकते; फिर भी यह ध्यान रखना कि यह हिंसा भी छोड़ने लायक ही है; इसीलिए जो मनुष्य संयमी हो जाते हैं, वे इन सबका त्याग कर मुनिधर्म धारण कर लेते हैं।''

''बुआ जी! आपने जो हिंसा के भेद बतलाए, वे हमारी समझ में कुछ–कुछ आए हैं; परन्तु आप यह तो बताएँ कि हम लालू कौए के साथ क्या करें?''

''बेटा! आप सभी सावधानी रखें। यदि अब वह फिर से आता है और किट्टी या और किसी को परेशान करता है तो अपनी सुरक्षा के लिए पहले उसे समझाएँ और न माने तो तत्काल में जो उपाय बने, वह करें; परन्तु योजना बनाकर, उसको बुलाकर, उसे अपनी बातों में फँसा कर, उसको मारना–पीटना या नुकसान पहुँचाना अच्छा काम नहीं है। लालू तो दुर्जन

है, दुष्ट प्रकृति का है परन्तु हमें सज्जनता छोड़कर दुष्टता नहीं अपनाना चाहिए।''

''बुआ जी! आप सही कह रही हैं। यदि कल लालू आया तो मैं उसे देख लूँगा। सबसे पहले मैं आपके कहे अनुसार चेतावनी ही दूँगा कि 'भैया! हमारे आनन्द–विहार में यदि तुम आए और किसी की तरफ आँख उठाई तो अच्छा नहीं होगा।' हमारे संगठन की ताकत देखकर वह निश्चित ही डरेगा और हमारे ऊपर आक्रमण नहीं करेगा; फिर भी यदि उसने बात नहीं मानी, तो हम सब जो उस समय सम्भव और आवश्यक होगा वह कार्य करेंगे।'' कालू कौए ने कहा।

''शाबाश बच्चो! आप सब समझदार हैं। हमें दूसरों की चिन्ता छोड़कर हमारे भाव और हमारा भव खराब न हो, इसकी चिन्ता करनी चाहिए।'' सुहानी ने सबको आशीर्वाद देते हुए कहा। ❖❖❖

कोई कुछ कर सके या न कर सके, परन्तु इतना काम वह पूरे मन, पूरी ताकत व समर्पण के साथ करता है कि होता हुआ अच्छा काम बिगड़ जाये, समर्पित कार्यकर्ता का मन काम करने से टूट जाये।

जब इस कार्य में सफलता मिलती है तो असीम आनंद भोगते हुए, चादर से मुँह ढ़ँककर सो जाता है।

– **'ऐसा क्यों होता है' से साभार**

10

स्वतन्त्रता का सुख

पिछले चार–पाँच दिन से हरिहर तोता आनन्द–विहार में नहीं दिख रहा था, जिसके कारण सभी परेशान थे। एक दिन शाम को टीना टिटहरी घबराई हुई आई और कहने लगी कि, "आज मैं गाँव में गई थी। वहाँ मैंने हरिहर तोता को एक व्यक्ति के घर में पिंजरे में कैद देखा। वह व्यक्ति उसे 'नमस्ते', 'गुड मॉर्निंग' – ऐसा कुछ बोलने के लिए बार–बार कह रहा था और हरिहर भैया बाहर निकलने के लिए परेशान हो रहे थे।"

यह सुनकर सभी चिन्तामग्न हो गए और यह समझ में आ गया कि कोई आदमी हरिहर को पकड़ कर ले गया है और पिंजरे में कैद कर दिया है। चिन्टू–पिन्टू और चिंकी ने कहा "कल हम टीना दीदी के साथ जाएँगे और देखकर आएँगे कि हरिहर तोता भैया वहाँ कैसे हैं?"

दूसरे दिन सुबह आनन्द–विहार का नभचर मण्डल टीना टिटहरी के साथ उस जगह पहुँचा जहाँ हरिहर तोता पिंजरे में था। उन्होंने दूर से देखा पिंजरा बहुत ही सुन्दर था, वह व्यक्ति बहुत ही प्यार के साथ उसे दुलार कर रहा था, प्रसन्नता के साथ मुस्कुराते हुए कुछ बोलने के लिए कह रहा था और हरिहर को

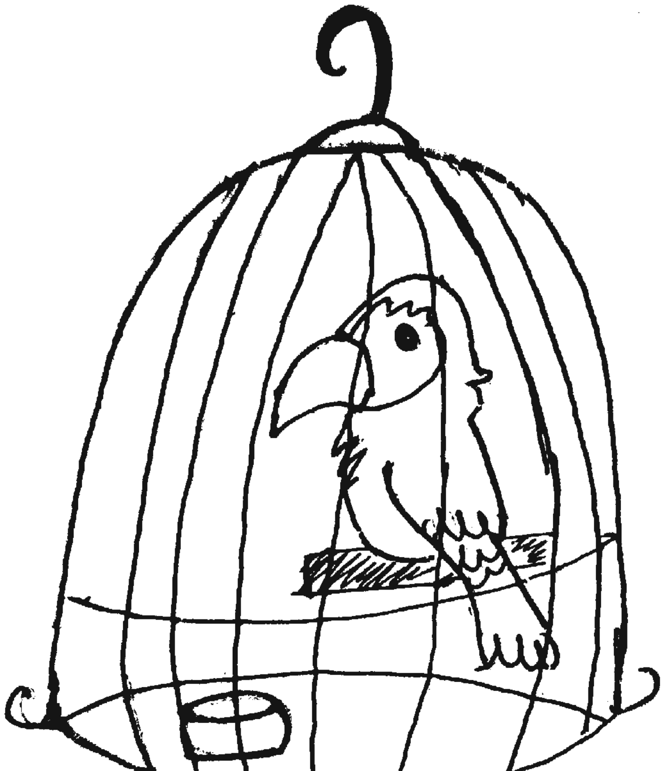

खाने के लिए काजू–बादाम आदि उसके पिंजरे में रख रहा था, सुन्दर कटोरी में पानी में भरा हुआ था।

यह सब देख कर चिन्टू ने कहा "हरिहर भैया को तो मजा आ गया, देखो कैसे काजू–बादाम खा रहा है। टीना, तुम तो ऐसे ही कह रही थी कि हरिहर परेशान है।"

"हाँ-हाँ! और देखो, कितना सुन्दर पिंजरा है और यह आदमी उसे कितना प्यार कर रहा है।" पिंटू ने कहा।

चिंकी ने जैसे ही हरिहर को आवाज दी तो हरिहर उन सब को देखकर, बाहर निकल कर उनसे मिलने के लिए तड़पने लगा; पर पिंजरे से बाहर कैसे आ सकता था? जब वह व्यक्ति उसे खाना देकर अपने काम से बाहर चला गया, तब सभी उड़कर हरिहर तोते के पास पहुँचे। टीना ने कहा - "हरिहर भैया! आपको यहाँ कैसा लग रहा है?"

हरिहर ने कहा "बहिन! मैं तो यहाँ पराधीनता में फँस गया हूँ। मैं तो यहाँ से बाहर निकलना चाहता हूँ। पर अब पता नहीं मैं इस जिन्दगी में बाहर निकल पाऊँगा या पूरे जीवन ऐसे ही कैद रहूँगा?"

"पर हरिहर भैया! आप तो यहाँ बहुत मजे में हैं। देखो, कैसे काजू-बादाम खाने को मिल रहे हैं, जामफल खाने को मिल रहा है, पानी के लिए भी कहीं नहीं जाना, तुम्हारे पास ही रखा हुआ है, तुम्हारा मालिक भी तुमको कितना प्यार करता है।" चिंकी ने कहा।

"चिंकी बहिन! जो बन्धन में होता है उसे ही बन्धन का दु:ख समझ में आता है। आप सब लोग स्वतन्त्रता पूर्वक उड़ रहे हो, मिल रहे हो, बातचीत कर रहे हो, पर मेरी जिन्दगी तो बस

इतने पिंजरे में ही सिमट कर रह गई। ये काजू–बादाम किस काम के ? क्या इनसे अनन्तकाल तक जिया जा सकता है ? अरे ! जहाँ स्वतन्त्रता ही छीन ली गई हो, वहाँ आनन्द कैसा ? मुझे जो उड़ने के लिए पंख मिले हैं, वे पंख अब किस काम के ? तुम सबके साथ रहकर जो स्वतन्त्र जीवन जीने का आनन्द था, वह चला गया। तुम भाग्यशाली हो जो सभी मिलकर साथ रह रहे हो।'' हरिहर ने दुःखभरी लंबी साँस लेकर आँखों में आँसू भरते हुए कहा।

हरिहर की बातें सुनकर चिंकी और टीना को लगने लगा कि हरिहर बन्धन में है और दुःखी है। भले ही उसके पास साधन बहुत हो गए हैं, जिनको देखकर हम सब समझ रहे हैं कि वह बहुत भाग्यशाली है, लेकिन स्वतन्त्रता का छिन जाना सबसे बड़ा कष्ट है। पर चिन्टू–पिन्टू इस बात को नहीं समझ पा रहे थे। चिंकी ने हरिहर से पूछा – ''हरिहर भैया ! आपको सुहानी बुआ जी से कुछ कहना है ?''

''चिंकी बहिन ! बुआ जी से कहना कि हरिहर ने पूछा है कि मुक्ति का उपाय क्या है ?'' आँखों में आँसू भरे हुए सभी आनन्द–विहार में वापस आ गए।

आनन्द–विहार में आते ही चिंकी ने कहा ''बुआ जी ! चिन्टू–पिन्टू तो छोटे बच्चे हैं। वे बाहर की चीजें देख कर ही सुख मान रहे हैं, परन्तु सच बात तो यह है कि हरिहर भैया

बन्धन में पड़ने से बहुत दु:खी हैं, उनकी स्वतंत्रता छिन गई है..... ।''

चिन्टू बीच में ही बोल पड़ा ''नहीं मम्मी! हरिहर भैया बहुत मजे में हैं। उनका बहुत सुन्दर पिंजरा है, उनका मालिक बहुत प्यार करता है उनको बहुत अच्छी-अच्छी चीजें खाने के लिए देता है, पीने के लिए पानी देता है, अब उसे कहीं जंगल-जंगल भटकना नहीं पड़ेगा।'' सुहानी चुपचाप चिन्टू की बातें सुनती रही।

सुहानी ने बच्चों को समझाते हुए कहा ''बेटा खाने-पीने और रहने की व्यवस्था हो जाना ही सुख का कारण नहीं है। ऐसे अच्छे साधन मिलने पर भी जो बन्धन मानता है, जो इनसे छूटना चाहता है, उसे ही सच्ची स्वतन्त्रता मिलती है। जो कुछ देर के लिए मिली इन सुविधाओं में अटक जाता है, वह हमेशा बन्धन में ही रहता है। चिंकी बेटा! हरिहर ने और क्या कहा?''

''उसने कहा है कि बुआजी से पूछकर आना कि मुक्ति का उपाय क्या है?''

चिंकी की बात सुनकर सुहानी की आँखों में आँसू आ गये, वह आसमान की ओर देखने लगी और विचार करने लगी कि 'बन्धन का कितना दु:ख है। हम अनादिकाल से चार गतियों में भटक रहे हैं, मोह-राग-द्वेष में फँसकर, आठ कर्मों के बन्धन

में उलझे हुए हैं। हम इन कर्मों से, इस शरीर से कब मुक्त हो पाएँगे ? जो बन्धन में है, वही बन्धन के दुःख को जानता है। हरिहर के पास साधन बहुत हो गए होंगे; परन्तु उसका मन वहाँ नहीं लग रहा, क्योंकि सच में उनमें सुख है ही नहीं। सुख तो स्वतन्त्रता/स्वाधीनता में है, सुख बन्धन में नहीं, मुक्ति में है। अब मैं क्या करूँ? कैसे हरिहर को वहाँ से मुक्त होने का उपाय बताऊँ?' बहुत सोचने के बाद सुहानी ने चिंकी से कहा –

"बेटा! कल जब तुम हरिहर भैया के पास जाओ तो उससे कहना – सब लोग इस शरीर को ही प्यार करते हैं। जीव को तो जानते नहीं है, इस शरीर में जीव होने से यह शरीर भी जिन्दा कहलाता है, बस सब लोग इसे जिन्दा मानकर इस से ही प्यार करते हैं, जीव निकल जाने के बाद कोई इसे प्यार नहीं करता, कोई घर में नहीं रखता है।"

"बुआ जी! पर उसने पूछा है कि मुक्ति का उपाय क्या है ? वह तो बताओ।"

"बेटा! तुम तो केवल उसे जो मैंने कहा वह कह देना बस।" इतना कहते हुए उसका गला भर आया।

दूसरे दिन जब सभी हरिहर के पास पहुँचे तब हरिहर ने इन सबको देखते ही उत्सुकता से पूछा कि "बुआ जी ने मुक्ति का उपाय क्या बताया?"

चिंकी ने नीचे गर्दन करते हुए कहा "भैया! उन्होंने मुक्ति का उपाय तो कुछ नहीं बताया।"

"उन्होंने कुछ नहीं कहा?" हरिहर उदास होते हुए बोले।

"नहीं, कहा तो है?"

"क्या कहा?"

"बुआ जी कह रही थीं कि सब लोग केवल इस शरीर से ही प्यार करते हैं, इसके अन्दर जो जीव है, उसे जानते नहीं। जीव के कारण ही यह शरीर जिन्दा कहलाता है। जीव निकल जाने पर इस शरीर से कोई प्यार नहीं करता, बस इतना ही कहा।"

हरिहर यह सुनकर और बुआ जी की बात का विचार कर अन्दर ही अन्दर प्रसन्न हो गया कि 'मुझे मुक्ति का उपाय मिल गया है।'

मालिक भोजन लेकर आने ही वाला था इसलिए सभी उड़कर खिड़की से बाहर चले गए और हरिहर उसी पिंजरे में मुर्दे की भाँति गिर पड़ा।

मालिक आया उसने कहा "मिट्ठू!"

कोई आवाज नहीं आई, "मिट्ठू" तब भी कोई आवाज नहीं आई।

"देखो मैं तुम्हारे लिए केला लेकर आया हूँ।" तब भी हरिहर हिला भी नहीं। यह देखकर मालिक थोड़ा घबरा करके बोला – "मिट्ठू को क्या हो गया?" और उसने पिंजरे का दरवाजा खोला, हिलाया, लेकिन हरिहर तो अकड़ कर ही पड़ा रहा।

यह देखकर मालिक समझ गया कि मिट्ठू मर गया है। जीव निकलने के बाद तो लोग अपने माता-पिता, प्यारी से प्यारी पत्नी, बेटा-बेटी को ही नहीं रखते तो इस तोते के मुर्दे को तो घर में कौन रखेगा?

हरिहर के मालिक ने हरिहर को पिंजरे से बाहर निकालकर खिड़की के बाहर फैंक दिया। जैसे ही मालिक ने खिड़की से बाहर फैंका, हरिहर टें-टें करते हुए उन्मुक्त गगन में उड़ने लगा। वह बहुत खुश हुआ और दौड़ते हुए सुहानी के पास पहुँचा। सुहानी ने हरिहर को देखा और गले से लगा लिया।

"बुआ जी आपने मुझे मुक्त होने का, स्वतन्त्र होने का उपाय बता दिया। आपका मैं क्या आभार व्यक्त करूँ? सच ही है, जब तक इस शरीर को अपना मानकर हम हँसते-खेलते रहेंगे, तब तक बन्धन में रहेंगे और जब इस शरीर से हटकर, अपने आप में स्थिर होंगे, इस शरीर और दुनिया के लिए हम मुर्दा के समान हो जाएँगे, अपने स्वरूप में निश्चल हो जाएँगे, तभी मुक्ति को प्राप्त करेंगे।" हरिहर ने गद्‌गद् स्वर में कहा। ❖❖❖

11

अयाचकता

चिन्टू-पिन्टू जब भी माँ के साथ किसी के यहाँ जाते तो बहुत प्रसन्न होते; क्योंकि दूसरे के यहाँ स्वागत होता था, तरह-तरह के मिठाई-नमकीन खाने को मिलते थे, दूसरे बच्चों के साथ खेलने को मिलता और उपहार (गिफ्ट) भी मिल जाते थे।

इस तरह आते-जाते चिन्टू को एक गन्दी आदत लग गई थी कि वह जिसके यहाँ भी जाता, वहाँ वह जो कुछ भी अच्छी वस्तु देखता, वह उसे माँगने लग जाता। कभी किसी आन्टी के यहाँ तो कभी किसी चाचीजी के यहाँ जाता और जो भी चीज अच्छी लगती, वह उसे माँग लेता। चिन्टू की माँगने की आदत के कारण अब तो अनेक लोग, जब भी चिन्टू घर पर आने वाला होता, तो अच्छी-अच्छी चीजें छुपा कर रख देते कि पता नहीं चिन्टू की किस चीज पर नजर पड़ जाए और वह माँगने लग जाए – 'यह पैन मुझे दे दो' या 'एक खिलौना मुझे दे दो', 'ये कपड़े मुझे दे दो', 'किताब मुझे दे दो', जो भी उसे दिखता वह माँगने लग जाता है; इस बात से सुहानी बहुत दुःखी थी।

एक बार जब सुहानी कपोती का परिवार मिताली बहन के

यहाँ गया तो वहाँ पर चिन्टू ने बबलू कबूतर के खिलौने देखते ही कहा "मौसीजी! यह खिलौना कितना अच्छा है। ऐसा खिलौना मेरे पास नहीं है। यह खिलौना आप मुझे दे दोगे?"

बबलू को भी वह खिलौना बहुत पसन्द था। उसने उसे साफ मना कर दिया कि 'मैं अपना खिलौना नहीं दूँगा'। लेकिन चिन्टू के माँगने पर मिताली उसे वह खिलौना देने लगी। सुहानी ने बहुत मना किया लेकिन चिन्टू ने झपट कर वह खिलौना ले लिया। बबलू बेचारा रोता रह गया।

रास्ते में सुहानी ने बहुत समझाया कि "बेटा! किसी से कुछ भी माँगने की आदत अच्छी नहीं है। अच्छे बच्चे दूसरों के सामने हाथ नहीं फैलाते।"

चिन्टू बोला "मिताली हमारी मौसी ही तो हैं। वह कोई गैर थोड़ी हैं। मौसी से नहीं माँग सकते क्या ? मुझे खिलौना अच्छा लगा, तो माँग लिया। आप तो खिलौने देती नहीं, बस शिक्षा ही देती रहती हो।"

यह सुनकर सुहानी सोचने लगी चिन्टू को कभी शान्ति से समझाना होगा।

एक दिन "आनन्द-विहार" में बैठे हुए सुहानी ने सभी बच्चों को समझाया – "बच्चो ! हमारे पास जो साधन हों, हमें उनका ही उपयोग करना चाहिए। हमें कभी भी किसी से कोई चीज माँगना नहीं चाहिए, माँगने वाले की दुनिया में इज्जत नहीं होती। एक गाने में कवि बच्चों से पूछता है –

भीख में जो मोती मिलें, लोगे या न लोगे ?

बच्चे जवाब देते हैं –

भीख में जो मोती मिलें, तो भी हम न लेंगे।

बच्चो ! हमारे विचार भी ऐसे ही होने चाहिए।"

"पर बुआजी अपने रिश्तेदारों से कुछ माँगना तो भीख नहीं है, वे तो अपने ही हैं।" कालू कौआ ने कहा।

"देखो बेटा ! किसी विशेष अवसर पर – जैसे तुम्हारा जन्म-दिन है या त्योहार है, तो जिसके पास जो होगा वह प्रेम

से दे, तो आशीर्वाद समझकर, धन्यवाद देते हुए ले लेना चाहिए, परन्तु अन्य समय में किसी की कोई अच्छी चीज देखकर प्रशंसा करते हुए माँगना या मुझे मिल जाये यह भावना रखना गन्दी आदत है।'' सुहानी ने कहा।

''पर बुआजी! यदि हमें जरूरत हो तब तो माँग सकते हैं।'' टीना टिटहरी ने कहा।

''बेटा! आवश्यकता होने पर कोई चीज माँगना अलग बात है, पर किसी के भी खिलौने, कपड़े, सजावट की सामग्री या और कुछ, जो जरूरत में शामिल नहीं है, वह माँगना, बहुत बुरी आदत है।

माँगने वाले को सभी लोग लालची समझते हैं। माँगने पर कभी कोई चीज, कोई दे भी दे तो भी मन में वह माँगने वाले को अच्छा नहीं समझता, सब उसे तिनके से भी हलका समझते हैं।'' सुहानी ने समझाया।

''मम्मी, आप कह रही हो कि माँगने वाला तिनके से हल्का होता है; पर तिनके को तो हवा उड़ा कर ले जाती है, माँगने वाले को तो हवा साथ में उड़ा कर नहीं ले जाती, तो कैसे कहेंगे कि माँगने वाला तिनके से भी हल्का होता है।'' चिन्टू ने हँसते हुए कहा।

सुहानी ने गम्भीरता से कहा ''बेटा! तुम्हारे जैसे विचार

वालों के लिए ही सुभाषितकार लिखते हैं –

तृणादपि लघुस्तूलः तूलादपि च याचकः।
वायुना किं न नीतोऽसौ मामयं प्रार्थयेदिति॥

तिनके से हल्की रुई है, और रुई से भी हल्का याचक है। पर, याचक को वायु क्यों नहीं उड़ा ले जाती?

इसलिये कि उसे डर है, कहीं मुझसे भी कुछ माँग न ले।

समझ में आया चिन्टू, हवा माँगने वाले को क्यों नहीं उड़ा ले जाती? कोई भी माँगने वाले को अपने साथ में नहीं रखना चाहता। इसलिए प्यारे बच्चो! यह माँगने की आदत हमारे में नहीं होनी चाहिए।"

चिन्टू ने कहा – "मम्मी! मैं कान पकड़ता हूँ, अब मैं कभी भी किसी से किसी की कोई भी चीज नहीं माँगूँगा। कोई देगा भी तो भी मैं नहीं लूँगा। हमें खेलना होगा तो उनके ही घर खेल करके आ जाएंगे, परन्तु किसी का खिलौना या कपड़े या किताब लेकर अपने घर नहीं आऊँगा।"

चिन्टू की यह शपथ सुनकर सुहानी प्रसन्न हो गई।

❖❖❖

12

संतान को सम्पत्ति नहीं सन्मति दीजिए

आज का दिन बहुत ही सर्दीला है। मकर सन्क्रान्ति का पर्व देश में मनाया जा रहा है। मैंने सुबह-सुबह जब अपनी खिड़की में देखा तो वहाँ पर सर्दी में सिकुड़ी हुई अकेली सुहानी बैठी थी; उसके दोनों बेटे चिन्टू और पिन्टू उसके पास नहीं थे। मैंने सुहानी से पूछा - "सुहानी बहन! चिन्टू-पिन्टू कहाँ गए?"

सुहानी ने गुटर-गूँ करते हुए कहा "चिन्टू-पिन्टू ने अब अपना-अपना घर बना लिया है।"

मैंने पूछा "अपना घर बना लिया इसका क्या मतलब? क्या वे अब आपको छोड़ करके चले गये हैं?"

सुहानी ने कहा "नहीं! वे छोड़कर नहीं चले गये, अब मैंने ही उनको अपने से अलग कर दिया है।"

"अच्छा! आपने चिन्टू-पिन्टू को अलग कर दिया और वे भी अलग रहने चले गये; तो सुहानी बहन! आपने उनको क्या-क्या दिया है? जिससे उनका जीवन चल सके।" मैंने पूछा।

सुहानी अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से प्रश्नवाचक दृष्टि से देखते हुये बोली "क्या-क्या दिया का मतलब क्या है आपका? बच्चों को क्या दिया जाता है?"

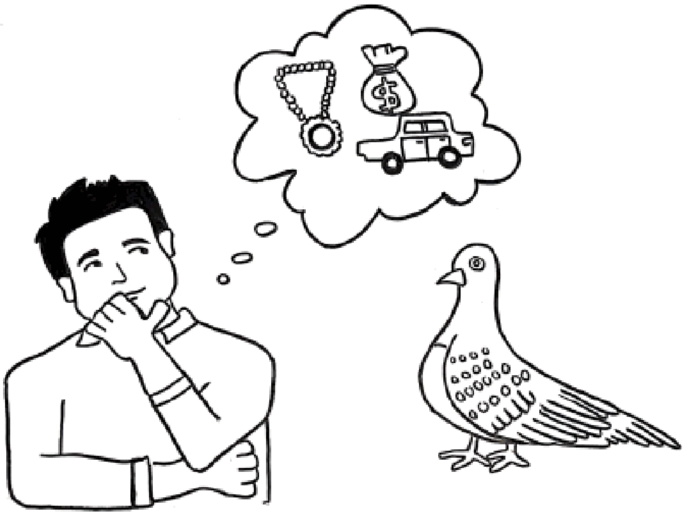

मैंने कहा ''हम सब भी जब अपने बच्चों को अपने से अलग करते हैं तो उन्हें सोना-चाँदी, बँगला, कार आदि देते हैं।''

सुहानी बोली ''अरे भैया! यह सब तुम मनुष्यों के ही चोंचले हैं जो इतने हट्टे-कट्टे, पढ़े-लिखे, कमाऊ बेटे को भी सोना-चाँदी बँगला और कार देते हो; हम तो जब अपने से अलग करते हैं तो केवल संस्कार देते हैं।''

''सुहानी बहन! इसका क्या मतलब है कि हम बच्चों को संस्कार नहीं देते हैं? हम भी तो बच्चों को पढ़ाते-लिखाते हैं, नौकरी के योग्य बनाते हैं।''

"अरे भैया! रहने दो। आप सब मात्र धन कमाऊ शिक्षाएँ देते हैं। अपने स्वार्थ पूर्ति की शिक्षा देते हैं। पद–पैसा पाने की शिक्षा देते हैं और उन पद–पैसा, अधिकारों का कैसे भोगों में उपयोग किया जाए, यह संस्कार देते हैं। आपके द्वारा दी गई धन–कमाऊ शिक्षाएँ आपके बच्चों को स्वार्थी बनाती हैं, भोगी बनाती हैं, जिससे बाद में रोगी बनकर तड़प–तड़प कर मरते हैं; जबकि हम सोना–चाँदी नहीं, केवल उन्हें स्वतन्त्र रहने के संस्कार, अपना कार्य, अपनी सुरक्षा, अपने सजातीय बन्धुओं से व्यवहार कैसे किया जाए – इसके संस्कार देते हैं और इन संस्कारों के दम पर वे अपना पूरा जीवन स्वतन्त्रता के साथ जीते हैं, कभी हमारी तरफ सहारा पाने के लिए देखते भी नहीं हैं।"

"अरे! नहीं बहन – ऐसा नहीं है। हम मनुष्य भी एक दूसरे की सेवा करते हैं, एक दूसरे का सहयोग करते हैं, एक दूसरे के सुख–दुख में काम आते हैं।"

"हाँ! हाँ! भैया, मैं भी इस दुनिया में घूमती रहती हूँ, न जाने कितने घरों की मुंडेरों पर बैठकर मैंने घरों के हाल देखे हैं। कैसे आज पढ़े–लिखे बेटे–बहू अपने माता–पिता और सास–ससुर की सेवा कर रहे हैं, यह हमें पता है, हमें मत सिखाओ आप। भैया! मैं आपसे ही पूछना चाहती हूँ, क्या आपने अपने बच्चों

को भक्ष्य–अभक्ष्य के संस्कार दिए ? कर्तव्य–अकर्तव्य का ज्ञान कराया ? अरे ! इन संस्कारों की कमी के कारण ही जगह–जगह आपके अस्पताल खुले हुए हैं। हमारे लिए तो कहीं अस्पतालों की जरूरत नहीं पड़ती। आप भोगी बनाकर उन्हें रोगी बनने के मार्ग पर ले जाते हैं और हम अपने बच्चों को खाद्य–अखाद्य का ज्ञान कराते हैं, जिससे उन्हें कभी रोगी नहीं होना पड़ता, अस्पतालों और दवाइयों की जरूरत नहीं पड़ती।

मैंने शहरों में देखा है कि अनेक जगह वृद्धाश्रम बने हुए हैं। जिन बच्चों को माता–पिता ने सोना–चाँदी, मकान, शिक्षा और कार दी, वे ही बच्चे योग्य संस्कारों के बिना अपने माता–पिता को वृद्धाश्रम में भेज देते हैं; जहाँ वे रोते हुए अपनी जिन्दगी काटते हैं। भैया ! आप बताओ, क्या आपने हम पक्षियों के कभी कहीं वृद्धाश्रम देखे हैं ? नहीं। क्योंकि हमारे चाहे वह बच्चा हो या बूढ़ा, अपना स्वतन्त्र जीवन जीने, अपने को स्वस्थ रखने और समय पड़ने पर दूसरों का सहयोग करने के संस्कारों से भरा हुआ होता है।''

''बहन ! बात तो आप बहुत कुछ सही कह रही हो। मनुष्यों में हो तो ऐसा ही रहा है। लेकिन आप अपना जीवन अकेले कैसे काटोगी ?'' मैंने संकोच करते हुए पूछा।

''अरे ! क्या बात करते हो ! मैं अकेली हूँ या यह सारा संसार

ही अकेला है? वास्तव में सब संयोग हैं, कोई साथी नहीं। कोई किसी का सुख-दुख बाँट नहीं सकता है। साथ की भावना, संसार की भावना है। एकत्व की भावना, मुक्ति की भावना है।

''मैं एकाकी एकत्व लिए, एकत्व लिये सब ही आते।
तन-धन को साथी समझा था, पर ये भी छोड़ चले जाते।।

इन पंक्तियों को आप केवल गाते हो, भाते नहीं हो।'' सुहानी ने करुणरस आपूरित व्यंग्य किया।

मैं सुहानी की बात सुनकर शर्मिंदा हुआ कि सच में हम इन पंक्तियों को केवल गाते ही रहते हैं जबकि हमें इन्हें भाना चाहिए, अर्थात् निरन्तर चिन्तन करना चाहिए ।

सुहानी ने कहा ''भैया! बुरा मत मानना। मैं तो बस इतना ही कहना चाहती हूँ कि 'संस्कार बिना की सुविधाएँ पतन का कारण हैं।' आप बच्चों को सम्पत्ति नहीं सन्मति दीजिए; उन्हें कार नहीं संस्कार दीजिए, तो उनका जीवन बिना सोना-चाँदी, गाड़ी-बँगले के भी सुखमय रहेगा। संस्कारों के कारण वह आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे और यदि आपने संस्कार नहीं दिए तो आप उनको कितना भी पैसा, सोना-चाँदी दे देना इसके बाद भी आपके पास जो आपके लिए होगा उस पर भी उनकी खोटी नजर लगी हुई होगी कि यह धन-पैसा भी मुझे मिल जाए।

इसलिए स्वतन्त्रता के संस्कार दीजिए, भक्ष्य-अभक्ष्य के संस्कार दीजिए, उन्हें कर्तव्य-अकर्तव्य, अपने-पराए, हित-अहित के संस्कार उत्पन्न हों ऐसी शिक्षा दीजिए; उन्हें भोग और स्वार्थ से हटकर योग और परमार्थ के संस्कार दीजिए, अन्यथा सब यहीं पाया और रोते-रोते सब यहीं छोड़ कर चले जाएँगे।''

सुहानी की इस सीख ने मुझे सोचने को मजबूर कर दिया कि हम सभी अपने बच्चों को 'सन्मति' न देकर, केवल 'सम्पत्ति' दे रहे हैं, हम उनके 'कैरियर' की चिन्ता में 'कैरेक्टर' सम्हालना ही भूल रहे हैं, सुन्दर 'चित्र' देखकर प्रसन्न होते रहते हैं जबकि 'चरित्र' का पता ही नहीं चल रहा है।

''धन्यवाद सुहानी! मैं तुम्हारी यह 'स्वतन्त्रता के संस्कारों की सीख' मनुष्यों तक पहुँचाने का प्रयास करूँगा।'' ❖❖❖

'मैं महापुण्य उदय से जिनधर्म पा गया' यह भजन गाने और अपने को जैन कहने, अल्पसंख्यक घोषित कराने, 'जब तक सूरज चाँद रहेगा – जैनधर्म का नाम रहेगा' के नारे लगाने, मकानों-दुकानों-गाड़ियों पर 'जैन' लिखाने में जितना उत्साह होता है, उतना जिन सिद्धान्तों जैसे -भगवान की वीतरागता, सर्वज्ञता, अकर्तावाद, वस्तुस्वातंत्र्य तथा प्रतिदिन जिनदर्शन करना, रात्रि-भोजन नहीं करना-कराना, पानी छानकर पीना आदि सहज व वैज्ञानिक क्रियाओं जिनके कारण जिनधर्म अन्य सबसे अलग है को समझने व स्वीकार करने के प्रति रुचि/उत्साह नहीं होता। – **'ऐसा क्यों होता है' से साभार**

13

ज्ञान का सम्मान - देता केवलज्ञान

आनन्द–विहार में नभचर मण्डल के सदस्य सायंकाल भोजन के उपरान्त इधर–उधर भ्रमण करते, बातचीत करते हुए पाठशाला में जाने की तैयारी कर रहे थे। चिन्टू कबूतर ने कालू कौए से कहा 'भैया! भैया! मुझे व्यसन की परिभाषा बताओ ना।'

कालू कौआ गर्दन झटकते हुए बोला, 'व्यसन–फ्यसन की परिभाषा मुझे नहीं आती।'

'प्लीज भैया! बताओ ना। आपको तो सब याद हो जाता है।'

'नहीं, मुझे कुछ याद नहीं रहता।'

'कल तो आप स्कूल की दूसरी बहुत सारी बातें बता रहे थे और कह रहे थे मुझे स्कूल में जो पढ़ाते हैं वह सब याद हो जाता है।'

'अरे! वह तो मैंने ऐसे ही कहा था, मुझे किसी ने पढ़ाया नहीं है। स्कूल के टीचर को तो कुछ नहीं आता, वे मुझे क्या पढ़ायेंगे। मेरा दिमाग तेज चलता है तो मैं अपने मन से सोचता रहता हूँ और करता रहता हूँ।' कालू घमण्ड से बोला।

चिन्टू रोते हुए टीना टिटहरी से बोला 'टीना दीदी! देखो

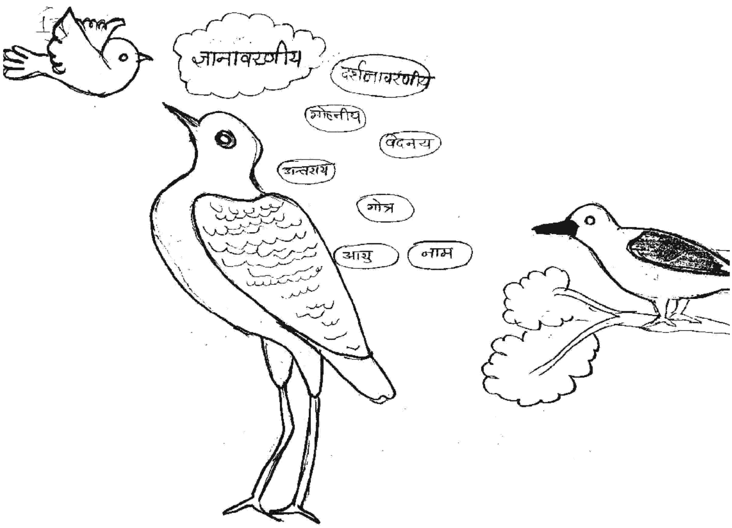

ना कालू भैया को सब कुछ आता है; लेकिन वे हमें कुछ बताते नहीं हैं और जो स्कूल में पढ़ाया गया था उसे भी कह रहे हैं कि टीचर ने नहीं पढ़ाया, मैंने अपने आप सीखा है। हाँ एक बात और, कालू भैया दूसरों को पढ़ते समय डिस्टर्ब भी करते हैं। आप इनको कहो न कि हमें व्यसन की परिभाषा बता दें; आज पाठशाला में मम्मी परिभाषा पूछेंगी।'

टीना ने सभी बच्चों को बुलाकर कहा ' आप सभी ध्यान से सुनो ! हमने पाठशाला में सुहानी बुआ से सुना है न कि हमें जो ज्ञान प्राप्त है वह हम किसी को नहीं बताते, उसे छुपाते हैं, अपने पढ़ाने-सिखाने वाले गुरु जी का नाम छिपाते हैं, ज्ञान का अहंकार

करते हैं, ऐसा सोचते हैं कि कोई हमसे आगे ना बढ़ जाए, तो कुछ पूछने पर भी उसे नहीं बताते, कोई सच भी बताता है, तो उसका तिरस्कार करते हैं, दूसरों के पढ़ने में विघ्न करते हैं – इस तरह यदि हम ज्ञान और ज्ञानियों का तिरस्कार करते हैं, तो ज्ञानावरण कर्म का आस्रव–बंध विशेष रूप से होता है।'

'ज्ञानावरण कर्म के आस्रव–बन्ध से क्या होगा दीदी?' चिन्की चिड़िया ने पूछा।

'यदि ज्ञानावरण कर्म का बन्धन होगा तो हमें भविष्य में सम्यग्ज्ञान ही प्राप्त नहीं होगा। हम याद करना चाहेंगे तो भी हमें याद नहीं होगा, समझना चाहेंगे तो समझ नहीं पाएँगे।'

'अच्छा दीदी, ऐसा कर्म क्यों बँधता होगा?' हरिहर तोते ने पूछा।

'भैया! यदि आप ज्ञान या अपने गुरुजन के नाम को छिपा रहे हैं, किसी को ज्ञान प्राप्त करने में अन्तराय कर रहे हैं; तो इसका मतलब है कि आप सच्चे ज्ञान को फैलाना नहीं चाहते, छिपाकर रखना चाहते हैं, तो ऐसे कर्म का बन्धन होता है, जिससे हमारा ज्ञान ही छिप जाता है।'

'अच्छा दीदी! ऐसा होता है? तो फिर हमें खूब ज्ञान प्राप्त हो, अच्छी बातें याद रहें, हम अच्छी–सच्ची बातों को समझ कर जीवन को सुन्दर बना सकें, इसके लिए क्या करना चाहिए?' पिन्टू ने पूछा ।

'अरे मेरे छोटे-से पिन्टू राजा! आपको पता है? मुझे पहले कुछ भी याद नहीं होता था, सब मेरी मजाक उड़ाया करते थे और मैं रोती रहती थी पर जब से सुहानी बुआ ने समझाया तब से मैंने सम्यग्ज्ञान और ज्ञानियों का सम्मान किया, विनय पूर्वक अभ्यास किया तो अब मुझे भी याद होने लगा है।

देखो पिन्टू! हमें जो चीज चाहिए है, उसकी प्रशंसा करो, उसे दूसरों को दो तो आपको भी मिलेगी। जैसे आप घर में यदि मम्मी से कहोगे कि मम्मी यह मिठाई बहुत अच्छी बनी या आज की खीर बहुत अच्छी बनी तो मम्मी आपको और खाने को देंगी और यदि आप मिठाई या खीर खाते हुए भी उसकी प्रशंसा नहीं करोगे, उसे छिपाओगे तो मम्मी समझेंगी कि यह चीज आपको पसन्द नहीं है तो वे आपको और नहीं देंगी।

इसी तरह यदि हम ज्ञान चाहते हैं, तो ज्ञान की प्रशंसा करें, ज्ञानियों का आदर करें, गुरुजन का सम्मान करें; यदि कोई हमसे कुछ जानना चाहता है और हमें वह आता है तो बहुत प्रेम से उसे बताएँ, उसे समझाएँ, कुछ याद होने से अपने आप को बड़ा न समझें, ज्ञान का अहंकार न करें तो हमारा ज्ञान बढ़ेगा, हमें जल्दी याद होगा और इतना ही नहीं, ज्ञान का सम्मान करने वालों को तो भविष्य में केवलज्ञान तक की भी प्राप्ति हो जाती है।'

यह सब सुनकर लल्लू उल्लू दुःखी होते हुए बोला 'दीदी! आपकी बातें सुनकर मुझे लग रहा है कि मैंने पहले ज्ञान की

विराधना की होगी, ज्ञानियों का अपमान किया होगा; इसलिए जिस समय सारी दुनिया देखती–जानती है, पढ़ती है, सूर्य सबके अँधेरे को दूर कर देता है, पर उसी समय मेरे जीवन में अँधेरा छा जाता है। दीदी! अब मैं भी प्रयास करूँगा कि ज्ञान और ज्ञानियों का सम्मान करूँ। कभी भी मेरे द्वारा ज्ञान की विराधना न हो, जिनवाणी का अपमान न हो।'

कालू कौआ बोला 'दीदी! आज आपने बहुत अच्छी बात बताई है। सुहानी बुआ ने हमें भी यह सब समझाया था; लेकिन मैं उनकी सीख पर ध्यान नहीं दे रहा था। मैं पाठशाला में सबसे आगे दिखने के लिए चिन्टू को नहीं बता रहा था जिससे कि सब इसे कमजोर समझकर, मुझे क्लास का मॉनिटर बना दें; लेकिन अब मैं ऐसा नहीं करूँगा। अब मैं ज्ञान बाँटूँगा। जो पढ़ा रहे हैं उनकी प्रशंसा करूँगा। कोई भी ऐसा काम नहीं करूँगा जिससे किसी को ज्ञान की प्राप्ति में अन्तराय हो जाए।'

'शाबाश! बहुत अच्छा! ऐसी ही सबकी भावना होनी चाहिए।' टीना ने कहा।

'दीदी! दीदी! लेकिन मेरे मन में एक प्रश्न है।' हरिहर तोते ने कहा।

'बोलो भैया! क्या प्रश्न रह गया?'

'दीदी! आपने कहा कि यदि कोई पूछे तो हमें उसे बताना

चाहिए। यदि परीक्षा हो रही हो तो क्या वहाँ भी कोई हमसे प्रश्नों के उत्तर पूछे तो बताना चाहिए?'

हरिहर के प्रश्न को सुनकर सभी टीना की ओर देखने लगे कि टीना दीदी क्या जवाब देती हैं। टीना ने कहा 'नहीं भैया! परीक्षा की बात अलग है। परीक्षा का मतलब यही है कि आप अपने ज्ञान को खुद परख रहे हैं कि आपको कितना ज्ञान प्राप्त हुआ। कोई गलती रह गई होगी तो गुरुजन कॉपी चेक करके बताएँगे कि आपकी यह गलती रही, इसलिए नम्बर कम आये हैं। जिससे आप आगे सुधार कर सकें।

परीक्षा में यदि आपने दूसरों को बताया, तब तो आप नकल कराने के आरोप में पकड़े जाओगे और मालूम है नकल कराने के विरुद्ध कानून भी बहुत सख्त बन गया है। नकल कराने वाले को जेल भी हो सकती है।' टीना ने हँसते हुए कहा।

'अच्छा! ऐसा है। फिर तो हम परीक्षा में कभी किसी को नहीं बताएँगे। अब हमारी समझ में आ गया कि समझते-समझाते समय, ज्ञान का प्रचार करते समय हम सबको खूब बताएँ, सिखाएँ तो हमारा ज्ञान बढ़ेगा और आपस में प्रेम भी बढ़ेगा।' हरिहर ने मुस्कराते हुए कहा।

'हाँ! अब सही समझे। चलो! चलो! पाठशाला का समय हो गया।' टीना ने कहा और सभी पाठशाला चल दिए। ❖❖❖

14

शूरवीर

हरिहर तोता जगह-जगह जाकर बहुत-सी बातें पढ़कर आया था और आनन्द-विहार में अपने नभचर मण्डल के बीच बहुत बड़ी-बड़ी बातें कर रहा था। 'मैंने इतनी किताबें पढ़ ली हैं, मैं बहुत कुछ जानता हूँ, तुम लोगों को कुछ नहीं आता, चिन्टू-पिन्टू तो निरे मूर्ख हैं, बस गुटर गूँ-गुटर गूँ करते रहते हैं, इनके तो नाम बड़े और दर्शन थोड़े हैं। मैं तो अंग्रेजी-संस्कृत सब सीखकर आया हूँ, तुम सबको तो काला अक्षर भैंस बराबर है।' ऐसी बहुत-सी बातें वह सुना रहा था। चिन्टू-पिन्टू और सभी चुपचाप उसकी बातें सुन रहे थे।

दूसरी ओर चिंकी चिड़िया बोली 'हमारी बहन किट्टी कोयल की मीठी-मीठी वाणी सुनकर तो सभी मोहित हो जाते हैं। उनकी बातों में उलझ कर बड़े-बड़े लोग अपना काम भी भूल जाते हैं। सच में इतनी अच्छी वक्ता हमारे नभचर मण्डल की सदस्य हैं, इसका हमें गर्व है।'

कालू कौआ अपने आपको आनन्द-विहार के नभचर मण्डल का हीरो मानते हुए बोला 'अरे! पढ़ने-लिखने की बातें छोड़ो, किताबें तो कोई भी पढ़ सकता है, इसमें क्या दम है? मीठी-

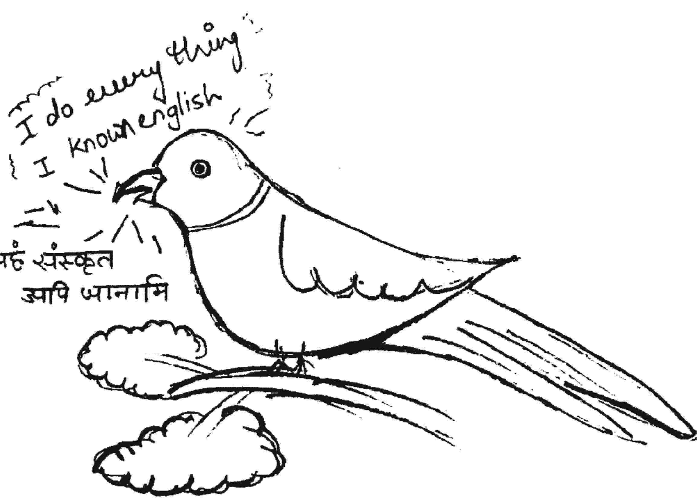

मीठी बातें करने से भी क्या फायदा है ? यदि हाथ–पाँव में दम न हो तो कोई किसी को नहीं पूछता।

हरिहर की रटी हुई बातों से क्या लाभ है ? उस जैसे तोतों को तो लोग पकड़ कर पिंजरे में बंद कर देते हैं और किट्टी कोयल की मीठी–मीठी बातें सुनकर उसी को आम के पेड़ पर से भगाने के लिए लोग पत्थर मारा करते हैं। सच में तो मेरी होशियारी और ताकत देखो; जिस लालू कौए से टीना टिटहरी, हरिहर तोताराम और चिन्टू–पिन्टू सब डरते थे, मैंने आज उसकी इतनी जमकर धुनाई की है कि वह अब कभी भी अपने आनन्द विहार की ओर आ भी नहीं सकता।'

टीना टिटहरी बोली, 'कालू भैया ! आपने बहुत अच्छा किया।

आप तो सचमुच सुपरमैन हो। लालू सबको बहुत परेशान करता था, उसको सबक सिखाने वाले आप शूरवीर हो।

हमें बड़ी खुशी है कि हमारे नभचर मण्डल में हरिहर जैसे 'इण्टेलीजेंट' पण्डित, किट्टी कोयल जैसी मधुरभाषी वक्ता और चिंकी चिड़िया जैसी प्यारी-प्यारी बुलबुल, जो सबको कुछ न कुछ देती रहती है और तुम्हारे जैसे शूरवीर सम्मिलित हैं। हमारा नभचर मण्डल धीरे-धीरे राष्ट्रीय नभचर मण्डल बन जाएगा।'

सुहानी कपोती नभचर मण्डल के सभी सदस्यों की बातें बड़े धैर्य से सुन रही थी। सुहानी ने कहा, 'बच्चो! आप सब में अलग-अलग तरह की विशेषताएँ हैं, कोई सुन्दर दिखता है, कोई सुन्दर बोलता है, तो कोई ताकतवर है; लेकिन केवल इतना सब हो जाने से कोई बड़ा नहीं कहलाता किसी ने कहा है -

'न रणे विजयाच्छूरो, नाध्ययनाच्च पण्डितः।
न वक्ता वाक्पटुत्वेन, न दाता चार्थदानतः।।'

इसका अर्थ यह है कि रण में अर्थात् लड़ाई में जीतने से कोई शूरवीर नहीं होता है, केवल किताबी ज्ञान करने या रट्टा मारने से कोई पण्डित नहीं होता है, केवल बातों की चतुराई से कोई वक्ता नहीं कहलाता है और न केवल धन देने से दानी कहलाने लग जाता है। इसलिए शूरवीर-पण्डित-वक्ता-दाता का सही अर्थ

समझना चाहिए, नहीं तो हम व्यर्थ ही घमण्ड करके पाप बाँधते रहेंगे।'

सुहानी बुआ की बात सुनकर सभी बच्चे उनकी तरफ टुकुर-टुकुर देखने लगे और बोले, 'चाचीजी! यदि युद्ध में जीतने से शूरवीर नहीं होते, किताबें पढ़ने से पण्डित नहीं होते, अच्छी बातें करने से वक्ता नहीं कहलाते और धन देने से दाता नहीं कहलाते तो फिर शूरवीर-पण्डित-वक्ता-दाता किसे कहेंगे?'

सुहानी ने कहा 'बच्चो! ध्यान से सुनो हमारे आचार्यों ने कहा है -

'इन्द्रियाणां जयाच्छूरो धर्माचाराच्च पण्डितः।
हितप्रयोक्तिभिर्वक्ता, दाता सम्मान-दानतः।।'

अपनी इन्द्रियों को जीतने अर्थात् वश में करने से शूरवीर, धर्म का आचरण करने से पण्डित, हितकारी वचन बोलने से वक्ता और दूसरों को सम्मान देने से दाता होता है।

बच्चो! जो दूसरों को लड़ाई में जीतता है वह स्वयं की कषाय से हार जाता है, जो केवल किताबी ज्ञान करता है; परन्तु धर्म का आचरण नहीं करता वह पण्डित नहीं है; क्योंकि धर्म मात्र परिभाषा नहीं, प्रयोगशाला है।

इसी तरह जो अपनी मीठी-मीठी बातों में दूसरों को फँसाकर, दूसरों को परेशान करे, वह अच्छा वक्ता नहीं है, अच्छा और

सच्चा वक्ता तो वही है जो हितकारी बातें बोलकर दूसरों को सही मार्ग पर लगा दे और धन, भाग्य से मिलता है; उसे स्वयं को बड़ा दिखाने के लिए, अपना नाम कमाने के लिए किसी दूसरे को दे देने मात्र से दाता नहीं बन जाते; दाता तो दूसरों को सम्मान देने से बनते हैं।'

कालू कौआ काँव–काँव करता हुआ विनम्रतापूर्वक सुहानी के पैर छूकर बोला 'मैं जंगल में दूसरों को चोट पहुँचाकर, डराकर, परेशान करके अपने आप को अभी तक शूरवीर समझ रहा था; लेकिन आपने सच कहा कि अपनी इन्द्रियों को जीतने वाला ही शूरवीर है। मैं तो सच में इन्द्रियों और कषायों की गुलामी ही कर रहा हूँ।'

हरिहर तोते ने कहा 'बुआजी! मैं अब केवल बोलने वाला नहीं, धर्माचरण करने वाला पण्डित बनने का प्रयास करूँगा।'

किट्टी कोयल ने भी कहा, 'बुआजी! अब मैं किसी को अपनी मीठी वाणी से फँसाऊँगी नहीं, भटकाऊँगी नहीं। मैं सबको हितकर और सच्ची बात बता कर, सुख के मार्ग में लगाने का प्रयास करूँगी।'

चिन्टू–पिन्टू बोले – 'मम्मी! हम अपने से जो भी ज्ञान, गुण, पद, आयु में बड़े हैं, उन्हें सम्मान और छोटों को स्नेह व सहयोग देकर, नाम की चाह के बिना सच्चे दाता बनेंगे।'

टीना टिटहरी बोली, 'सुहानी बुआ हमारे आनन्द-विहार की शान हैं, जान हैं। आप हम सब बच्चों को हमेशा प्यार और बड़ों को सम्मान देती हैं इसलिए आप ही दाता हैं। बुआ आप हमेशा धर्माचरण करती हैं, प्रतिदिन मन्दिर जाती हैं, शुद्ध सात्त्विक और दिन में ही भोजन करती हैं, इसलिए आप ही पण्डित हैं। हम लोग कितना ऊधम करते हैं, आपको परेशान करते हैं, गलतियाँ करते हैं फिर भी आप कषाय नहीं करतीं, इतना ज्ञान होते हुए भी घमण्ड नहीं करतीं, कभी भी इन्द्रियों के अधीन होकर कोई गलत वस्तु का उपयोग नहीं करतीं, व्यर्थ की इच्छाएँ नहीं करतीं इसलिए आप ही इन्द्रियों और कषायों को जीतने वाली होने से शूरवीर हैं और सबको सच्ची-सच्ची बातें बताने के कारण आप ही वक्ता हैं। बोलो सुहानी बुआ की जय।'

सुहानी ने कहा, 'प्यारे बच्चो! मैं तो तुमसे उम्र में बड़े होने और तुम से प्रेम करने के कारण ही तुम्हें कुछ बताती हूँ। मैं ऐसी बड़ी नहीं हूँ कि जयकारा लगाया जाए। हमेशा ध्यान रखना जयकारा वीतरागी पंच परमेष्ठी भगवन्तों का ही लगाया जाता है। वे ही सच्चे दाता-शूरवीर-पण्डित और वक्ता हैं। हमें उनके ही बताए मार्ग पर चलना है। इसलिए आप सभी बोलो पंचपरमेष्ठी भगवान की।'

'जय हो-जय हो।' सभी प्रसन्नतापूर्वक बोले। ❖❖❖

15

मृत्यु प्रतीक्षा नहीं करती

दशलक्षण पर्व का पावन प्रसंग चल रहा था आनन्द विहार में सुहानी कपोती समस्त पक्षी परिवार के बीच दशलक्षण पर्व का माहात्म्य बतला रही थी।

'दशलक्षण पर्व शाश्वत पर्व हैं। यह पर्व संयम की साधना, आत्मा की आराधना के पर्व हैं। दशलक्षण पर्व किसी व्यक्ति या घटना से सम्बन्धित न होकर आत्मा के ही सुखदायक-शान्ति दायक भावों को बतलाने वाले हैं। क्षमा-मार्दव-आर्जव-शौच-सत्य-संयम-तप-त्याग-आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य - ये सभी भाव शान्ति प्रदान करने वाले हैं इसलिए हमें पुरुषार्थ पूर्वक इन दशलक्षणों को धारण करना चाहिए।'

कालू कौआ बोला, 'बुआजी! आप जो कह रही हैं वह सही है, परन्तु धर्म तो वृद्धावस्था में करना चाहिए। अभी तो हम बच्चे हैं हमारे तो खेलने-खाने के दिन हैं, हमें अभी से धर्म के चक्कर में क्यों फँसा रही हो। हम अभी से धर्म में लग जाएँगे तो लाइफ में एन्ज्वाय ही नहीं कर पाएँगे।'

सुहानी ने कहा - 'कालू बेटा! इस बात को सदैव ध्यान रखना -

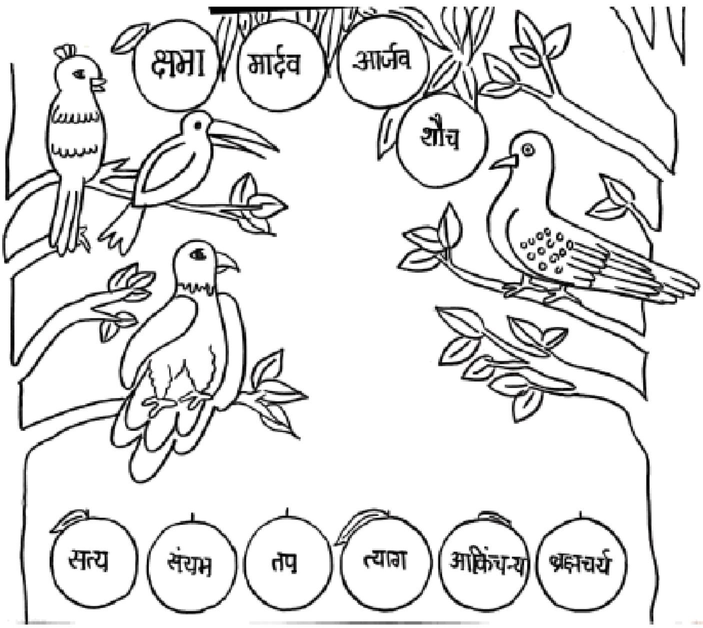

'मृत्युः प्रतीक्षते नैव, बालं तरुणमेव वा।'

अर्थात् मृत्यु कभी भी इस बात की प्रतीक्षा नहीं करती है कि कौन बालक है ? कौन वृद्ध है ? कौन युवा है ? जिसकी, जिस प्रकार, जब भी आयु पूर्ण हो जाती है तभी देह छूट जाती है। प्यारे बच्चो! हमने कोई मायाचार, छल-कपट किया होगा जिसके कारण से तिर्यंचगति में आए हैं, परन्तु हमारा सौभाग्य है कि हमें पाँचों इन्द्रियाँ और मन मिले हैं, जिनके कारण हम तत्त्व चर्चा सुन सकते हैं, समझ सकते हैं और स्वीकार सकते हैं।

जिनके कान और मन नहीं होते वे तो कभी तत्त्वचर्चा सुन ही नहीं सकते। हित–अहित के बारे में विचार ही नहीं कर सकते, इसलिए वे तो केवल और केवल दुःखी ही होते रहते हैं।

हमारा यह पाप का उदय है कि तिर्यंच गति में आए हैं तो साथ में कोई अच्छे भाव भी किए होंगे, देव–शास्त्र–गुरु के सम्मान का भाव रहा होगा, जिसके कारण हमें कान भी मिले और मन भी मिला। इसलिए इनका उपयोग करते हुए धर्म मार्ग में लगना चाहिए।

बच्चो! जरा सोचो क्या सभी पक्षी वृद्धावस्था आने पर ही मरते हैं? क्या आपने ऐसा नहीं देखा कि कबूतरों–चिड़ियाओं को कभी बिल्ली खा जाती है तो कभी कुत्ता पकड़ करके मार देता है तो कभी बाज पक्षी मार देता है, कभी तेज बारिश में पक्षी की आयु पूर्ण हो जाती है तो कभी गर्मी में खाने–पीने को नहीं मिलता और आयु पूर्ण हो जाती है; इसलिए यह आवश्यक नहीं है कि वृद्धावस्था आएगी ही और कालूराम आप बुढ़ापे में धर्म कर पाओगे?'

'बुआजी, आप बात तो सही कह रही हैं; पर क्या करें मन होता है कि हमें जवानी मिली है तो अभी घूमें–फिरें बाद में धर्म के मार्ग पर चल पड़ेंगे।'

बच्चो! इसीलिए कवि ने लिखा है –

'अंजलि जल सम जवानी क्षीण होती जा रही।
प्रत्येक पल जर्जर जरा नजदीक आती जा रही।।
काल की काली घटा प्रत्येक क्षण मंडरा रही।
किंतु पल-पल विषय तृष्णा तरुण होती जा रही।।

बच्चो! प्रत्येक समय जैसे अंजुली का जल खाली होता रहता है ऐसे ही एक-एक दिन करके हमारी आयु घटती जा रही है, जवानी जा रही है और बुढ़ापा नजदीक आ रहा है साथ ही हर समय मौत हमारे सिर पर मँडरा रही है; पता नहीं आज हम सब हैं और कल की सभा में कौन चला जाए पर दुर्भाग्य है कि इतनी विपरीतता होते हुए भी सबके मन में विषयों की तृष्णा बढ़ रही है, विषयों का आकर्षण बढ़ रहा है, पाँच पापों और पाँच इन्द्रियों के विषयों में प्रत्येक जीव का मन अपने आप लगता है।

आप लोगों ने पहले कहा है कि मनुष्य के छोटे बच्चे से लेकर बड़े-बड़े लोग टेलीविजन और मोबाइल के डिब्बों में उलझे हुए हैं, घूमने-फिरने में उलझे हुए हैं, रात में चौपाटी पर खा रहे हैं। सब साधन उपलब्ध हैं; लेकिन मन्दिर नहीं जाते, पूजन नहीं करते, केवल पार्टियों में घूमने-फिरने और नए-नए विषय भोग के साधन इकट्ठे करने में अपनी आयु पूरी कर देते हैं।

प्यारे बच्चो! अपने लिए इस गति में जन्म लेने का यही फायदा है कि हमें अधिक संग्रह करने की भावना नहीं होती, हम

अपने घर में कोई सामान जोड़ करके नहीं रखते; लेकिन जो खेलने–कूदने के भाव हैं, जो डाल–डाल पर फुदकने के भाव हैं, खेतों में जाकर के तरह–तरह के अनाज खाने के भाव हैं उन भावों को भी संयमित करना चाहिए। वे भी असीमित ना हों, एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या ना हो, किसी दूसरे को मारने का भाव ना हो, किसी से लड़ने–झगड़ने इत्यादि के भाव ना होकर हम विचार करें कि मैं कबूतर नहीं, तोता नहीं, चिड़िया नहीं, उल्लू नहीं, टिटहरी नहीं यह तो शरीर की तरफ से मनुष्यों के द्वारा दिए गए नाम हैं सच में तो इन तरह तरह के रूपों में भी हम जानने–देखने वाले आत्मा हैं।

कोयल का शरीर अलग तरह का है तो टीना टिटहरी का अलग तरह का है, हरिहर तोता का अलग तरह का है लेकिन आत्मा सब का एक प्रकार का है और हम सबकी एक ही विशेषता है कि हम सब सुख चाहते हैं, दुख से डरते हैं। सुख बाहर नहीं है सुख हमारे अन्दर ही है, हम बाहर ढूँढते हैं इसलिए हमें आज तक नहीं मिला।'

टीना टिटहरी बोली 'बुआजी! आप कितना अच्छा समझाती हैं। यह सत्य बात है कि हम सब केवल शरीर को देखकर किसी को सुन्दर, किसी को बुरी आवाज वाला समझते रहते हैं लेकिन सच में तो हम सब समान हैं, कोई छोटा बड़ा है ही नहीं। जब

हम सब आत्मा हैं, हम सब ज्ञान और आनन्द स्वभावी हैं। हम सब सुख चाहते हैं और दुख से डरते हैं तो हम सबके भाव एक जैसे हैं, हम सबका स्वभाव एक जैसा है।'

हरिहर तोता बोला 'बुआजी! हम सब इस आनन्द-विहार के बच्चे आपके सामने शपथ लेते हैं कि इस जीवन में यह जो हमें हरा-नीला-काला शरीर प्रकृति से मिला है, इससे भिन्न अपने निज आत्मा को जानने का प्रयास अवश्य करेंगे। अब हम शरीर और आवाज के कारण भेदभाव नहीं करेंगे।'

सभी ने सुहानी बुआजी का आभार व्यक्त करते हुए, दशलक्षण पर्व का जयकारा लगाकर सभा का समापन किया। ❖❖❖

चेतन प्यारे!

चेतन प्यारे! क्यों करता मनमानी?
चेतन प्यारे! क्यों करता मनमानी?
भक्ष्याभक्ष्य विचार नहीं, ना पिये छानकर पानी।
त्रस-थावर का घात करे तू, गिने उन्हें न प्राणी।।
जिन-दर्शन-पूजन ना भक्ति, नहीं दया उर लानी।
निशि भोजन का त्याग करे न, जो जैनत्व निशानी।।
वीतराग प्रभु को न माने, नहीं सुने जिनवाणी।
पर द्रव्यों का कर्ता बनकर, करता तूं नादानी।।
पर्यायों में अपनापन कर, निज निधि है बिसरानी।
जड़ द्रव्यों को अपना माने, जबकि तू है ज्ञानी।।
महाभाग्य जिनधर्म मिला है, अब तज दे मनमानी।
ज्ञानानंद स्वरूप निरख कर, कह मानी जिनवाणी।।

निरपेक्ष

काम किए जा सोच-समझ कर,
जो होवे निज पर को हितकर।
फूल मिले या धूल मिले।
मान मिले अपमान मिले।
तू ना हटना पर से डरकर।।
साथ देने न हाथ बढ़ाते।
गिरते को सब और गिराते।
रहना इनसे तू नित बचकर।।
यश पाने की ना हो आशा।
असफलता में नहीं निराशा।
करते रहना उद्यम डटकर।।
नदियाँ बहतीं, वृक्ष हैं फलते।
रवि-शशि भी हैं, नभ में उगते।
स्वार्थ नहीं कुछ, बस पर हितकर।।
स्वोदर तो है, श्वान भी भी भरते।
मनुज वही, जो परहित करते।
निज हित हेतु ही, परहित कर।।
परहित तो हो मात्र बहाना।
बुरे भाव से खुद को बचाना।
परहित संग तू, निजहित भी कर।।
सत्यपंथ पर जो हैं पलते।
पथ में यश-पद सुमन हैं खिलते।
विचलित न हो यश-पद लखकर।।

लेखक द्वारा लिखित प्रकाशित साहित्य

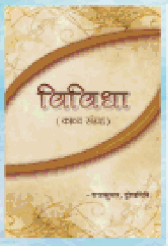

₹ 20/-

₹ 25/-

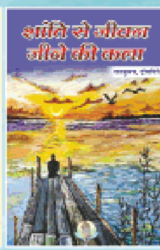

₹ 20/-

₹ 10/-

₹ 5/-

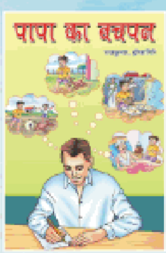

₹ 25/-

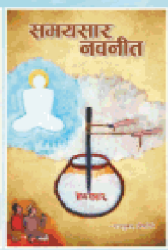

₹ 10/-

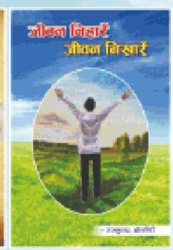

₹ 20/-

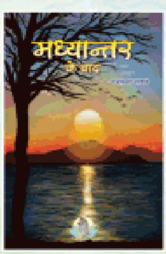

₹ 25/-

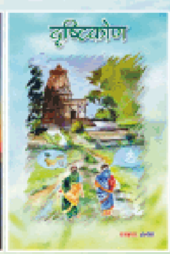

₹ 30/-

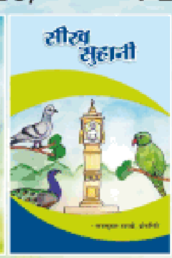

₹ 30/-

अप्रकाशित साहित्य

समर्पण का मासिक प्रकाशन संस्कार सुधा